thearyasamaj.org

ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

अप्रैल, 2015

॥ माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ॥

अथर्व० १२/१/१२

₹10

thearyasamaj.org

संस्मृतियाँ : स्व. पं. चन्द्रभानु आर्योपदेशक

२००३ ई. में नागपुर में आयोजित आर्य सेवक शताब्दी समारोह में व्याख्यान करते हुए स्व. पं. चन्द्रभानु आर्य।
मंच पर आचार्य जगद्देव जी (स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक) व अन्य विद्वान।

हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था जीन्द द्वारा आयोजित
एक समारोह में सम्बोधित करते हुए।

बीकानेर राजस्थान में एक कार्यक्रम में
भजनोपदेश करते हुए।

thearyasamaj.org

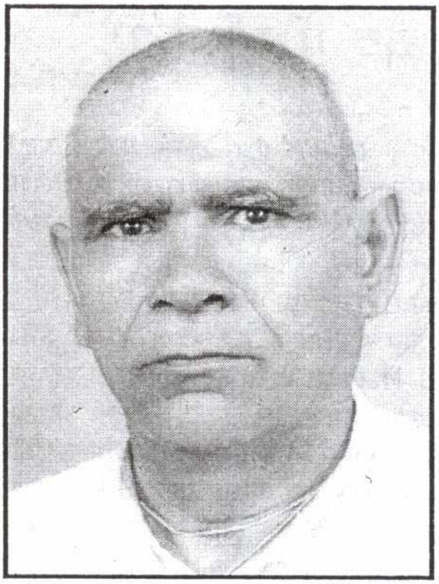

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०९४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१००.०० रु०
आजीवन	:	१०००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

अप्रैल, २०१५

वर्ष : १७ अंक : ३ वैशाख-ज्येष्ठ २०७२ विक्रमी
सृष्टि संवत्-१९६०८५३११६, दयानन्दाब्द : १९२

क्या? कहाँ?....

आलेख

श्रद्धांजलियाँ/संस्मरण ६
वैदिक धर्म एवं अन्य सम्प्रदाय (व्याख्यान) ८
अनुभव की बात १०
धर्म की आवश्यकता व राजनीति से संबंध ११
बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ १३
जमाने में क्या बदला (सामाजिक चिन्तन) १४
ऋषि दयानन्द के आदर्श १६
क्या द्रौपदी ने अंधे का अंधा कहा था १७
स्तुति प्रार्थना उपासनाः क्यों और कैसे १९
मधुमेह का सफल ईलाज (स्वास्थ्य चर्चा) २३

कहानी: मांस का मूल्य-१८, देवी-२१,
रानी चेन्नमा-२७, स्वर्ग और नरक-२८,

कविताएँ : १२, २८

स्थायी स्तम्भ : आपकी सम्मतियाँ-५, भजनावली-२५, बाल वाटिका-२६, समाचार-सूचनाएँ

कार्यालय :

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ९४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

thearyasamaj.org

वेद में मांसाहार

❑सहदेव 'समर्पित'

मनुष्य पशुओं से अलग क्यों है? इसका एक कारण उसका आहार भी है। भोजन से ही हमारे विचार और संस्कार भी प्रभावित होते हैं। मनुष्य का आहार शुद्ध, पौष्टिक तो होना चाहिए ही, इससे भी अधिक महत्त्व की बात यह है कि वह सात्त्विक और शुद्ध तरीकों से अर्जित किया हुआ होना चाहिए। पशु के लिए इतना ही पर्याप्त है कि उसका भोजन उसके शरीर की संरचना के अनुकूल होना चाहिए। मनुष्य के लिए इतना काफी नहीं है। भोजन उसके जीवन का साध्य नहीं है, साधन है। यही भोजन के संबंध में मनुष्य की शाश्वत परम्परा का सूत्र है। पशु को केवल अपने लिए सोचना है, अपना पेट भरने के लिए सोचना है। मनुष्य को दूसरों के लिए भी सोचना है, और भोजन से ज्यादा अपनी वृत्तियों की चिन्ता करनी है। इस दृष्टिकोण से मांस मनुष्य का भोजन कभी न तो हो सकता था, न हो सकता है। जिस काल्पनिक आदिकाल में मनुष्य को मांसाहारी कहा जाता है, वह युक्ति और प्रमाण से असत्य ही सिद्ध होता है। जब मनुष्य को पर्याप्त मात्रा में बिना परिश्रम किये अन्न और फल प्राप्त हों तो वह अपना पेट भरने के लिये किसी जानवर के पीछे क्यों भागेगा?

मनुष्य के इतिहास के किसी आदर्श काल में समाज के लिए आदर्श लोगों द्वारा मांस नहीं खाया जाता था। जब-जब मांसाहार के विरुद्ध वातावरण बनाने के प्रयास किये जाते हैं तो मांसाहार के समर्थक भाई सीधे उसी शाश्वत परम्परा का आखेट करने को उद्यत हो जाते हैं जो सभी प्राणियों के कल्याण की बात करती है। वे मांस खाना चाहते हैं, यह उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बात है, पर वे उसी पशु का मांस खाना चाहते हैं, जिसको दूसरे लोग माता मानते हैं, क्योंकि वह इतना उपकारी पशु है कि उसकी तुलना उसके अलावा केवल माता से ही की जा सकती है।

यह भी उनका मन हो सकता है कि वे उसी पशु का मांस खाना चाहते हैं। लेकिन हमारा संबंध इस बात से है कि वे शाश्वत परम्पराओं को दूषित सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। वे वेदों में मांसाहार का विधान ढूंढकर लाते हैं। जब वेदों में मांसाहार का विधान है तो परम्परा के नाम पर मांसाहार का विरोध करना अन्याय ही कहा जाएगा। उनके इस तर्क में दम तो है। इसका विरोध केवल शोर शराबा करके नहीं दिया जा सकता।

आज गंभीरतापूर्वक इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि वेदों में मांसाहार की बात कहाँ से आई? मांस न खाने वाले पक्ष के लोग कहते हैं कि यह सब विदेशी भाष्यकारों के आधार पर लिखा गया है। विदेशी भाष्यकारों में मुख्य रूप से क्लेटन, ग्रीफिथ, मैक्समूलर आदि के नाम आते हैं। उनकी संस्कृत विद्या में इतनी गति नहीं थी कि वे वेदों के भाष्य कर सकें। महर्षि दयानन्द को इसका प्रत्यक्ष अनुभव भी था कि विदेश में संस्कृत की चिट्ठी का अर्थ करने वाले भी बहुत कम हैं। इस योग्यता की कमी को उनमें से कुछ विद्वान् उदारता से स्वीकार भी करते हैं। क्लेटन और ग्रीफिथ ने अपने भाष्यों का आधार क्रमशः सायण और महीधर को स्वीकार किया है। भारतीय भाष्यकारों में सायण और महीधर के भाष्य ही सर्वाधिक प्रचलित हैं। विदेशी भाष्यकारों में मैक्समूलर आदि ईसा मत के प्रचारकों का भारतीय लोगों में वेदों के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न करने का पूर्वाग्रह भी इसमें सम्मिलित कर लें तो स्पष्ट हो जाता है कि ये सब वेद का भाष्य करने की क्षमता और योग्यता के विद्वान नहीं थे। वस्तुतः वेदों के यथार्थ का दर्शन तो ऋषि ही कर सकते हैं, और आर्ष परम्परा में वेदांगों की छाया में किये गए वेद भाष्यों में इस प्रकार के प्रकरणों का लेश तक नहीं है। निघण्टु और उनकी निर्वचन शैली में वेदों के शब्दों के रूढ़ अर्थ नहीं होते हैं। यह समझने की आवश्यकता है कि वेद ने ये शब्द लोक से नहीं लिये हैं, अपितु लोक ने ये शब्द वेदों से लिए हैं। निघण्टु में वाणी के ५७ अर्थ बताए गए हैं, जिनमे एक गौ भी है। स्तोता के १३ अर्थ हैं जिनमें एक गौ भी है। रश्मि के १५ नामों में एक गौ भी है। गौः का अर्थ द्यौ भी है, पृथिवी भी और गाय भी। वृषभ का सांसारिक अर्थ बैल है परन्तु निरुक्त के अनुसर यह मेघ भी है। वृषभ का अर्थ सामर्थ्यवान् पुरुष भी है। इस किञ्चिन्मात्र दिग्दर्शन से यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत की साधारण योग्यता रखने वाले और पक्षपातयुक्त मतवादी लोग वेद के प्रामाणिक भाष्यकार नहीं हो सकते हैं।

वेद मानव जाति के लिये सर्वोपरि सर्वमान्य ईश्वरीय ज्ञान है। वेद में दूसरे प्राणियों को मारकर खाने की शिक्षा न तो है, और न ही हो सकती है। यदि वेद को 'मांसाहार के विधान' के लांछन से मुक्त करना है तो मांसाहार के विरोधियों को साहस दिखाना चाहिए और केवल ऋषियों के भाष्यों को ही मान्य घोषित कर देना चाहिए। इसी में सम्पूर्ण मानवता का हित निहित है।

thearyasamaj.org

आपकी सम्मतियाँ

शांतिधर्मी का मार्च २०१५ अंक मिला। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य जी की परम्परा को योग्यतापूर्वक आगे बढ़ाएँगे। आगे भी ऐसे ही सुन्दर और सारगर्भित अंक प्राप्त होते रहेंगे ऐसी आशा और विश्वास है। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आप को इतनी शक्ति प्रदान करें कि आप स्व० पं० जी के पदचिह्नों पर चलकर इस शाश्वत अभियान में सफलता प्राप्त करें।

रामप्रगट वर्मा
ग्रा० इसरौली, पत्रालय कुडवार
जिला सुलतानपुर (उ० प्र०)

मार्च अंक के शांतिप्रवाह में आपके विचार पसंद आए। कई बार अहंकार और स्वाभिमान में बड़ा सूक्ष्म अन्तर उपस्थित हो जाता है। ऐसी स्थिति में इस प्रकार के विचारों का स्वाध्याय मार्गदर्शक सिद्ध होता है। डॉ० विवेक आर्य जी ने महिला दिवस के संबंध में आन्दोलन कारी विचार प्रकट किये हैं। हमारी संस्कृति में तो महिला सर्वकाल में पूज्या और सम्मान के योग्य है। उसकी स्वतंत्रता तो उसके निर्मात्री के रूप में निहित है। जिस समाज की वह निर्मात्री है, उसकी स्वतंत्रता यदि उसी समाज के विध्वंस का कारण बन जाए तो वह स्वतंत्रता पाखण्ड ही कही जाएगी। सब मनुष्यों का एक ही धर्म में आचार्य जी के विचार पूरी मानव जाति के लिए मार्ग दर्शक हैं।

जितेन्द्रप्रताप शास्त्री
पाल्हावास, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

मुझे बाल वाटिका तो बहुत ही अच्छी लगती है। आपने मेरी कहानी गुठली प्रकाशित की, मुझे बहुत अच्छा लगा। मेरे पास कई लोगों के फोन आए जिन्होंने मुझे आशीर्वाद व शुभकामनाएँ दीं। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।

आदित्य प्रकाश कक्षा ६
इण्डस पब्लिक स्कूल, जींद- १२६१०२

शांतिप्रवाह ने बहुत प्रभावित किया। मेरे मित्र भी शांतिधर्मी को बहुत रूचि से पढ़ते हैं।

बंशीलाल चावला,
झोझू कलां भिवानी-१२७०२१

चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व

शांतिधर्मी के संचालक और प्रधान सम्पादक व आर्यजगत् के महान् भजनोपदेशक श्री पण्डित चन्द्रभानु आर्य के विराट् व्यक्तित्त्व को जानने और जनाने के लिए 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व' बृहदाकार ग्रंथ पर पिछले एक वर्ष से कार्य चल रहा है। इस ग्रंथ में पण्डित जी की रचनाओं, जीवन यात्रा, संस्मरणों; साहित्यकार, कवि और उपदेशक के रूप में उनके योगदान पर प्रकाश डाला जाएगा। उनके सभी परिचितों, मित्रों, सहयोगियों, संबंधियों, श्रद्धालुओं, शिष्यों, संबंधित संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि उनसे संबंधित संस्मरण, चित्र, आदि या किसी पुस्तक, स्मारिका आदि में उनका उल्लेख यदि आपके पास उपलब्ध है तो कृपया डाक या ईमेल से भिजवाने की कृपा करें। अन्यथा हमें सूचित करने का कष्ट करें। हम स्वयं आकर उन्हें स्केन/फोटोप्रति के रूप में प्राप्त करेंगे। शांतिधर्मी में प्रकाशित और अभी प्राप्त हो रहे संस्मरणों का भी उक्त ग्रंथ में सादर उपयोग किया जाएगा।

सम्पादक शांतिधमी,
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जींद-१२६१०२
EMail- shantidharmijind@gmail.com
दूरभाष : 094165 45538, 094162 53826, 098964 12152
निवेदक : रमेशचन्द्र आर्य, सहदेव शास्त्री, रवीन्द्र कुमार आर्य (पुत्र)

thearyasamaj.org

श्रद्धांजली/संस्मरण

तपोनिष्ठ भजनोपदेशक, लेखक व साहित्यकार वैदिक धर्म के समर्पित प्रचारक, शांतिधर्मी के संस्थापक, संचालक व सम्पादक श्री पं० चन्द्रभानु आर्य जी का २३ दिसम्बर २०१४ को देहान्त हो गया। देश के कोने-कोने से श्रद्धांजली संदेश/संस्मरण प्राप्त हो रहे हैं, जिन्हें हम लगातार प्रकाशित कर रहे हैं। -सम्पादक

निष्काम कर्मयोगी

मैं पण्डित चन्द्रभानु जी आर्य भजनोपदेशक के आकस्मिक देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। आर्य भजनोपदेशकों की पुरानी पीढ़ी का यह अन्तिम स्तम्भ भी गिर गया है। ऐसे निष्काम कर्मयोगियों की सद्गति के लिए ईश्वर से किसी प्रार्थना की आवश्यकता नहीं है, किन्तु लोकाचार एवं आत्मसंतुष्टि के लिए हम सभी ईश्वर से उनकी सद्गति की प्रार्थना करते हैं। आशा है आप के सद्प्रयत्नों से 'शांतिधर्मी' पत्रिका पं० जी के यश:शरीर की धड़कन बनी रहेगी।

प्रो० सत्यवीर सिंह शास्त्री
(पूर्व मंत्री आर्य प्र० सभा हरयाणा)
ग्रा० पो० डालावास, त० बाढ़ड़ा, जिला भिवानी

शत शत प्रणाम

समाज के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य को मेरी विनम्र श्रद्धांजली। शत शत प्रणाम।

राजकुमार भारद्वाज,
2525, N.H.B.C. पानीपत

समाज की अपूरणीय क्षति

परिवार और समाज के नवनिर्माण की मासिक पत्रिका शान्तिधर्मी के संस्थापक संपादक चंद्रभानु आर्य जी आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके सामाजिक एवं साहित्यिक योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। पं० चन्द्रभानु आर्य एक समाजसेवी, आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता के साथ-साथ प्रसिद्ध भजन सम्राट् रहे। पंडित जी ने अपने जीवन काल के दौरान हिन्दी व संस्कृत दोनों ही साहित्य विधाओं पर समान अधिकार बनाए रखा। आपने अपने जीवन काल में संस्कृत व हिन्दी की अनेक कृतियों की रचना करने के साथ ही विभिन्न पुस्तकों का सम्पादन एवं अनुवाद भी किया। आपको गद्य एवं पद्य पर समान अधिकार था। आपकी कलम से लिखे गए शब्दों का मूल्यांकन करते हुए हरियाणा साहित्य अकादमी ने आपकी प्रसिद्ध भजन पुस्तिका 'भजन-भास्कर' को प्रकाशित कराया। आपने अपने लेखन में भक्ति रस, वीर रस व नारी-गौरव को प्रधानता दी। आपके जाने से समाज को जो अपूरणीय क्षति हुई है उसको किसी भी तरह भरा नहीं जा सकता। लेकिन आपके द्वारा लिखी गई कृतियों के माध्यम से हमेशा आम जन के मध्य अपनी जीवन्तता का अहसास कराते रहेंगे।

विनोद आर्य सहायक प्रोफेसर,
प्रताप युनिवर्सिटी, जयपुर
ई मेल-aryavinodcmt@gmail.com

श्रेष्ठ मानव पण्डित चन्द्रभानु आर्य

राजा हो या कि कोई रंक, जिसन लिया है जन्म,
संसृति में चले जाना उसका है अपरिहार्य।

किन्तु कुछ लोग ऐसे होते है महत्कार्य,
पूरा करते हैं लक्ष्य जीवन में जा अनिवार्य।।

उनमें भी किन्तु कुछ ऐसे होते हैं प्रवीर,
ऋषि दयानन्द के विचार कर शिरोधार्य,

बन शांतिधर्मी हैं गुंजाते वेद शंखनाद,
ऐसे ही श्रेष्ठ मानव थे पण्डित चन्द्रभानु आर्य।।

डॉ० वेद प्रकाश आर्य
प्र० सम्पादक 'आर्य लोक वार्ता'
वेदाधिष्ठान, ५३९क/२३४, हरीनगर (रवीन्द्रपल्ली)
पो० इन्दिरा नगर, लखनऊ-२२६०१६

वे हमेशा याद किये जाते रहेंगे।

सन् १९८०-८१ के आसपास उनके प्रचार सुने थे। वे हमारे छोटे भाई के विवाह में हमारे गांव भेरां में प्रचारार्थ आए थे। गांव में प्रचार हुआ। बारात में निमड़ीवाली में प्रचार हुआ। उस समय अमरीका से हमारे एक रिश्तेदार रिकार्डर लेकर आए थे, उनके प्रचार की रिकार्डिंग की थी। बहुत सुन्दर ओजस्वी प्रभावशाली आवाज थी। उनकी अपनी भजनावली होती थी, अपनी रचनाएँ होती थीं। सामाजिक बुराईयों पाखण्ड आदि का खण्डन अत्यंत सहजभाव से कर देते थे। उनकी प्रचार शैली हास्यरस से भी ओतप्रोत थी। उनके प्रचार में बहुत भारी संख्या में लोग उपस्थित हुए

thearyasamaj.org

थे और प्रभावित हुए थे। वे अब भी याद किये जाते हैं। आपने उनकी प्रचार यात्रा का जो विवरण दिया है, उसमें आर्यसमाज भिवानी का नाम नहीं है। उन्होंने आर्यसमाज भिवानी के माध्यम से भी प्रचार किया था। उनके निधन का समाचार सुनकर हमारे सभी परिजनों को बहुत दुःख हुआ। वे हमेशा याद किये जाते रहेंगे।

सुकर्मपाल सांगवान ग्राम भेरां,
वर्तमान निवास-सैक्टर ६, बहादुरगढ़, जिला झज्जर

मुस्कराते रहने वाले आकर्षक व्यक्तित्त्व के धनी

(स्व० पं० जी का नाम सुनते ही श्री प्रकाश प्रसन्नता से अभिभूत हो गए, पुरानी यादों को कुरेदते हुए उन्होंने प्रसन्नता के साथ कहा) I know this gentleman very well. मैं इन महानुभाव को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। गुरुकुल कालवा में अध्ययन के दौरान आपको निकट से जानने का अवसर मिला था। एक बार गांव गांगोली में प्रचार के दौरान मैंने उनके साथ प्रदीप का एक भजन गाया था, उन्हें बहुत अच्छा लगा, बहुत प्रशंसा की। बहुत मजेदार व्यक्ति हैं। उनका जो चित्र मेरी स्मृति में है, वे श्वेतवस्त्रधारी, हरदम मुस्कराते रहने वाले, आकर्षक व्यक्तित्त्व के धनी हैं। बड़े प्रभावशाली गायक के रूप में मैं उन्हें जानता हूँ। जब आचार्य जी को गुरुकुल के लिए कोई भी धन देने को तैयार नहीं होता था, तब वे चन्द्रभानजी को लेकर जाते थे, लोग पहले चन्द्रभानजी की बात सुनते थे फिर आचार्य जी की बात सुनने को तैयार होते थे। गुरुकुल की स्थापना के समय उन्होंने गांव-गांव में प्रचार किया और गुरुकुल के लिए चंदा एकत्र किया, जिससे गुरुकुल का कार्य चलता था। हम उनके साथ कबड्डी भी खेलते थे। उन्होंने बहुत काम किया है और मुझे खुशी है कि यह काम भी उन्हीं के निर्देशन में चल रहा है।

डॉ० सतीश प्रकाश,
न्यूयार्क, अमरीका में गुरुकुल चलाते हैं।
(मई २००५ में प्रकाशित उनके साक्षात्कार में)

सही अर्थों में वे समाज के लिए अनुकरणीय

वे ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे। मन, वचन और कर्म से न केवल दयानन्द के विचारों को मानते थे, अपितु उसे अपने जीवन में भी धारण किया। समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्डों के खिलाफ जीवन भर लगे रहे। वे एक कर्मठ आर्य कार्यकर्ता, कवि, उपदेशक एवं साहित्यकार थे। उन्होंने जीवन भर अपनी रचनाओं के माध्यम से जनजागरण का काम किया। मुझे भी उनके कुछ व्याख्यानों को सुनने का अवसर मिला। उनकी वाणी का प्रभाव ऐसा था कि जो सुनता था वह वाहवाही किये बिना नहीं रहता था। बिना माइक के भी उनकी आवाज दूर तक सुनी जा सकती थी। मुझे याद है जब एक कार्यक्रम में कुछ समय के लिए माइक रुक गया था तो उनका व्याख्यान रुका नहीं था। उस समय उनके भजन को सुनकर उपस्थितजनों को इतना आनन्द आया था कि उसी समय उनसे पुनः सुनाने का आग्रह किया। उन्होंने भी निराश नहीं किया और उस भजन को पुनः सुनाया। उन्हें बड़े बुजुर्ग तो सुनते ही थे, युवा वर्ग जो अक्सर भजनों और सामाजिक उपदेशों को उतने अच्छे ढंग से नहीं सुनता, वह भी उनके चुटीले अंदाज के कारण उनको ध्यानपूर्वक सुनता था। मेरी धर्मपत्नी अक्सर कहती थी सुनने में तो मजा पिताजी (चन्द्रभानु जी) जब बोलते हैं, तब आता है। सहज ही सामाजिक बुराईयों को व्यंग्यात्मक अंदाज में कह देते थे, जो चोट भी करती थी और हंसने पर भी मजबूर करती थी।

मुझे उनकी 'भीष्म भजन संग्रह', 'चन्द्रभानु आर्य का हरियाणा मेल' 'राजा और रंक' आदि कई अन्य किताबों को कम्पोज करने का सौभाग्य मिला। भजनों को सहदेव जी व्यवस्थित करके मेरे पास भेज देते थे और जो बहुत ही पुरानी हो गई थी, उनको व्यवस्थित करने में समयाभाव के चलते परेशानी होती थी तो वे स्वयं मेरे पास अक्सर घर पर आकर भजनों को बोलकर टंकित करवाते थे। उनके सम्पादन में निकलने वाली पत्रिका 'शांतिधर्मी' से मेरा शुरुआती अंक से ही जुड़ाव रहा है। मैं सदा ही इस पत्रिका के संपादक मंडल में रहा हूँ। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि 'शांतिधर्मी' आम पत्रिका नहीं, बल्कि ऋषि दयानन्द के विचारों को सच्चे अर्थों में आगे बढ़ाने वाली, तर्क-वितर्क के साथ सामाजिक बुराईयों को नष्ट करने वाली, राष्ट्रचिंतन देने वाली, सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका है। उनका संपादन कौशल कमाल का रहा है। उनकी पैनी और सतर्क दृष्टि पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ पर होती थी। उनका अभियान शांतिधर्मी के माध्यम से चलता रहेगा। आदरणीय चन्द्रभानु जी के व्यक्तित्व को शब्दों में बयान करना बहुत मुश्किल है। जिस वक्त मैं यह सब लिख रहा हूँ, विचारों की शृंखला दौड़ रही है। सही अर्थों में वे समाज के लिए अनुकरणीय थे। उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि उनके दिखाए-बताए मार्ग पर चलें और एक सच्चे समाज की कल्पना को साकार करने की ओर अग्रसर हों।

बिशम्बर तिवारी,
जय ग्राफिक्स, रेलवे रोड, जीन्द

thearyasamaj.org

वैदिक धर्म और अन्य सम्प्रदाय

स्व० पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक

यह व्याख्यान पं० जी ने नागपुर में आयोजित 'आर्यसेवक' के शताब्दी समारोह में २८ दिसम्बर २००३ ई० को दिया था। इसे हम आर्यसेवक के मई २००४ अंक से साभार उद्धृत कर रहे हैं। -सम्पादक

आदमी किसी भी मत मतान्तर को अपनाने की सोच ले, उसमें भगवान के साथ-साथ उस मत को चलाने वाले किसी व्यक्ति का नाम भी अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है। पर वैदिक धर्म में ऐसा नहीं है। हमारे पास एक सज्जन आए, कहने लगे कि मुझे भी आर्य बना लो परन्तु मैं दयानन्द का नाम नहीं लूँगा। मैंने कहा- सारी जिंदगी मत लेना परन्तु सच्चे अर्थों में आर्य बन जाओ। यही है धर्म।

एक भाई को देखा कि वह धीरे धीरे छूरी चला रहा है और बकरा काट रहा है। एक दूसरा भाई उससे कह रहा था कि ओ पापी, अन्यायी तू क्या कर रहा है? क्यों इसे तड़पा-तड़पा कर मार रहा है? मैंने उससे पूछा कि क्या तुम किसी जीव को नहीं मारते? तो उसने कहा- मारता तो हूँ, पर ऐसे तड़पा-तड़पाकर नहीं मारता हूँ। मैं तो एक झटके में ही बकरे का सिर और धड़ अपने खण्डे से अलग कर देता हूँ, हलाल नहीं करता हूँ। पास में एक साधु खड़ा था। वह दोनों से कहने लगा कि चाहे झटका करो अथवा कुर्बानी; मार तो दोनों ही रहे हो। इस प्रकार हिंसक तो दोनों ही हो। इसका नाम धर्म नहीं है।

अब एक भाई का बिस्तरा बँधा हुआ है। जब उससे पूछा जाता है कि कहाँ जा रहे हो तो वह कहता है कि गंगा स्नान को जा रहा हूँ क्योंकि-

गंगा गंगेति यो ब्रुयात् योजनानां शतैरपि।

अर्थात् सौ योजन दूर से भी जो गंगा का नाम लेता है, उसके सब जन्मों के पाप धुल जाते हैं।

वहाँ एक सरदार जी खड़े हुए थे। वे उससे कहते हैं कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। दूसरे दिन सरदार जी बिस्तर बाँधकर कहीं जाने के लिए तैयार मिले तो उनसे पूछा गया कि तुम कहाँ जा रहे हो? तब सरदार जी कहते हैं कि अमृतसर जा रहा हूँ, वहाँ गुरु के तालाब में स्नान करूँगा। पास में खड़े हुए मौलवी जी ने सरदार जी से कहा कि 'मन की मिटे कसर तो घर ही अमृतसर'। आगे मौलवी जी भी जब बिस्तर बाँधकर तैयार हो गए तो उनसे भी पूछा गया कि तुम कहाँ जा रहे हो? तो उन्होंने जवाब दिया कि मक्का। तब उसे किसी व्यक्ति ने कहा कि कल तो तुम उपदेश दे रहे थे कि घर ही अमृतसर है। आज मक्का क्यों जा रहे हो? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि 'मन पक्का तो घर ही में मक्का'। इन सब बातों कि एक ही सच्चाई है कि 'अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति' अर्थात् जल से शरीर शुद्ध होता है। जैसा कि मनु और उनके श्लोक का उद्धरण देकर ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है। सो यह जल चाहे कुएं का हो, तालाब का हो या नदी का हो, केवल बाहर की शुद्धि ही कर सकता है। इसी प्रकार मन की शुद्धि सत्य व्यवहार से, आत्मा, विद्या और तप से और ज्ञान से बुद्धि शुद्धि होती है। इसलिए सच्चाई एक ही है, चाहे कहीं चले जाओ, वैसे ही जैसे दो और दो चार होते हैं। कक्षा में तमाम विद्यार्थी बैठे हुए हों और यदि उनसे पूछा जाए कि दो और दो मिलकर कितने होते हैं तों जो-जो विद्यार्थी इसका उत्तर चार देंगे वे ही सही माने जाऐंगे। अन्य सब गलत। इसलिए ठीक जवाब एक ही होता है, गलत जवाबों की कोई सीमा नहीं।

मैं जब-जब आर्यसमाज सीताराम बाजार में जाता तो पं० रामचन्द्र देहलवी की सेवा किया करता था। वे मुझे बहुत अच्छी-अच्छी बातें और अवैदिक मतों की तर्कहीन बातें बताया करते थे। जैसे ईसाई कहते हैं कि चौथे दिन सूरज निकला तो पण्डित जी ने तर्क दिया दिन का पता तो

thearyasamaj.org

सूरज से चलता है तो पहले तीन दिनों का पता सूरज के अभाव में कैसे चला? आर्यों के ऐसे ही तर्क से ईसाईयों को अपनी बाईबिल का अर्थ बदलना पड़ा और लिखना पड़ा कि चौथे दर्जे पर सूरज निकला।

इसी प्रकार कुरान पर भी वेद का बड़ा असर है। अतः वैदिक धर्म के मुकाबले में कोई दूसरा धर्म नहीं है। ये तो थोड़े-थोड़े दिनों की दुकाने हैं।

ऋषि दयानन्द कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक बच्ची को देखकर सिर झुका दिया। तब किसी ने कहा कि आप तो मूर्तिपूजा का खण्डन करते हो, इस बच्ची के सामने सिर क्यों झुकाते हो? तब ऋषि दयानन्द ने उत्तर दिया कि यह तो मातृशक्ति है, इसका मनुष्य मात्र को सम्मान करना चाहिए। यह है आदित्य ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द का आचरण और दूसरी ओर आप मोहम्मद साहब को देख लें, जिन्होंने अनेक बीबियाँ कीं। हमारे ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त ऋषियों का ऐसा ही उत्तम आचरण था।

ईसाईयों को देखो वे ईसा मसीह को बिन ब्याही कुँवारी मरियम का बेटा बताते हैं। ईसा मसीह के विषय में किसी से पूछो कि वे किन के बेटे हैं तो ईसाई बताते हैं कि वे खुदा के बेटे हैं। वेद तो यह बताता है कि हम सब वेद के बेटे हैं-आर्यः ईश्वर पुत्रः। सो ईसा मसीह एक अच्छे मनुष्य तो सकते हैं परन्तु एकमात्र वे ही खुदा के बेटे नहीं हो सकते हैं। इसलिए हम सबका कर्त्तव्य है कि हम वेद की शरण में आएँ। ऋषि दयानन्द का सबसे महत्वपूर्ण कार्य उस जमाने में हमें वेदों से परिचित कराना था जिस जमाने में सारी मनुष्य जाति भटक रही थी और ईंट-पत्थरों में अपना सिर फोड़ रही थी।

वेद के अनुसार ईश्वर सर्वव्यापक है। हमारे हरियाणे में इस संबंध में बड़ा रोचक और शिक्षाप्रद द्रष्टान्त है। एक मौलवी साहब, एक पौराणिक पण्डित जी, एक ईसाई और एक चौधरी; ये चारों एक साथ यात्रा पर निकले। रास्ते कच्चे थे, रात्रि को एक गाँव की धर्मशाला में ठहर गए। भोजन का समय होने पर यह समस्या उत्पन्न हुई कि भोजन कैसे पाया जाए? पण्डित जी ईसाई और मुसलमान का छुआ हुआ खाने को तैयार नहीं थे। उसी समय गाँव में बाजे बजते सुनाई पड़े। किसी के यहाँ विवाह था। तब तय यह हुआ कि चौधरी जी वहाँ जाकर भोजन माँग लाएँ। इसलिए चौधरी जी वहाँ गए और चार लोगों के लिए साग-सब्जी, पूरी और लड्डू माँग कर ले आए। सबने मिलकर यह तय किया कि अभी तो केवल सब्जी, पूरी ही खा ली जाए और लड्डू कल के लिए बचाकर रख लिए जाएँ। सभी पूरी साग खाकर सो गए और निश्चय किया कि जिसे बढ़िया स्वप्न आएगा, वह लड्डू खाएगा। चौधरी जी ने सोचा कि ये तो सारे पढ़े लिखे हैं इसलिए इनका स्वप्न भी बढ़िया ही होगा। अतः मुझे तो लड्डू खाने को नहीं मिलेंगे। ऐसा सोचकर वह रात में उठ बैठा और सारे लड्डू खा गया। सवेरे जब सब उठे तो सबने अपना-अपना स्वप्न सुनाया। पण्डित जी ने कहा कि मुझे तो क्षीर सागर में विष्णु जी के दर्शन हुए जिनके लक्ष्मी जी पैर दबा रही थीं। मैंने उनकी रात भर सेवा की जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे खाने का आदेश दिया। अतः मुझे लड्डू मिलने चाहिएँ। पादरी जी ने बताया कि पण्डित जी तो क्षीर सागर में थे परन्तु मैं तो अपने स्वप्न में खुदा के पास चौथे आसमान पर था। मैंने खुदा की बड़ी ही सेवा की जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे लड्डू खाने का आदेश दिया। इतने में मियाँ जी भी उठ बैठे और सुनाने लगे कि मैं पादरी जी से भी ऊँचे स्थान पर सातवें आसमान पर था जहाँ अल्लाह मियाँ ने मुझे लड्डू खाने के लिए कहा। फिर चौधरी को जगाया गया और उसके स्वप्न के बारे में पूछा गया। उसने बताया कि मुझे तो कोई अच्छा स्वप्न नहीं आया। अलबत्ता रात बारह बजे मेरे पास हनुमान जी आए। उन्होंने मुझे लात मारकर उठाया और कहा कि ये लड्डू खा ले नहीं तो मैं तुझे बहुत पीटूँगा। मैंने आधे लडडू खा लिए और उनसे कहा कि ये तो चारों के हिस्से के हैं, मैं अकेले कैसे खा सकता हूँ। ऐसा सुनकर हनुमान जी ने कहा कि सब खा ले नहीं तो मैं तुझे जान से मार डालूँगा। सो मैंने उनके डर से सारे लड्डू खा लिए। तब अन्य तीनों ने कहा कि हमें क्यों नहीं जगाया? चौधरी जी ने कहा- मैंने तो बहुत शोर मचाया पर तुम्हारे में से कोई तो सातवें आसमान पर, कोई चौथे पर और कोई क्षीर सागर में विचरण कर रहा था, वहाँ तक मेरी आवाज कैसे पहुँच सकती थी।

इस प्रकार ऋषि दयानन्द के आने से पहले मानव जाति भटक रही थी। ऋषि ने बताया कि परमात्मा सर्वत्र है। यह सारी सृष्टि ही उसके गर्भ में है। परमात्मा इस सृष्टि के अन्दर भी है और बाहर भी है। यह सिद्धांत सर्वथा मुकम्मिल है। भूकम्प आते हैं। हमारे हरियाणा में भी भूकम्प के झटके लगे और ईरान में तो विनाश ही हो गया। तो इतनी बड़ी पृथ्वी को भी हिला देने वाली क्या कोई शक्ति नहीं है? इसलिए वेद कहता है कि परमात्मा सर्वशक्तिमान है, सर्वत्र उपस्थित है। इसलिए जो लोग परमात्मा को सर्वव्यापी मानेंगे वे कभी पाप-कर्म नहीं करेंगे। परन्तु जिनका परमेश्वर सातवें या चौथे आसमान पर बैठा है अथवा क्षीर सागर में विचरण

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

thearyasamaj.org

अनुभव की बात

❑ डॉ. विवेक आर्य (drvivekarya@yahoo.com)

देश के प्रसिद्ध उद्योगपति, कर्मयोगी एवं देशभक्त स्वर्गीय घनश्यामदास बिड़ला ने लगभग 80 वर्ष पूर्व अपने पुत्र श्री वसंतकुमार बिड़ला को एक अत्यंत मार्मिक पत्र लिखा था जो आज भी प्रासंगिक है और देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों एवं नौकरशाहों के लिए प्रेरणास्रोत है।

दीपावली संवत् 1991

चिरंजीव वसंत,

यह जो लिखता हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना। अपने अनुभव की बात करता हूँ। संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है, यह सच बात है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया, वह पशु है। तुम्हारे पास धन है, तंदरुस्ती है, अच्छे साधन हैं- उनका सेवा के लिए उपयोग किया तब तो साधन सफल हैं अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इतनी बातों का ध्यान रखना। धन का मौज-शौक में कभी उपयोग न करना। धन सदा रहेगा भी नहीं, इसलिए जितने दिन पास में है, उसका उपयोग सेवा के लिए करो। अपने ऊपर कम से कम खर्च करो, बाकी दुखियों का दुःख दूर करने में व्यय करो। धन शक्ति है। इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना संभव है, इसका ध्यान रखो। अपनी संतान के लिए यही उपदेश छोड़कर जाओ। यदि बच्चे ऐश-आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और हमारे व्यापार को चौपट करेंगे। ऐसे नालायकों को धन कभी न देना। उनके हाथ में जाये, इससे पहले ही गरीबों में बाँट देना। तुम यही समझना कि तुम इस धन के ट्रस्टी हो। तुम्हारा धन जनता की धरोहर है। तुम उसे अपने स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते। भगवान को कभी न भूलना। वह अच्छी बुद्धि देता है। इन्द्रियों पर काबू रखना, वर्ना ये तुम्हें डुबा देंगी। नित्य नियम से व्यायाम करना। भोजन को दवा समझकर खाना। इसे स्वाद के वश होकर मत खाते रहना।

घनश्याम दास बिरला

(विश्व हिंदी सेवी समाचार लखनऊ से साभार)

धन की शास्त्रों में 3 गतियाँ बताई गई हैं। पहली दान, दूसरी भोग एवं तीसरी नाश। धन का अगर आवश्यकतानुसार भोग करेंगे तो वह कभी दुःखदायी नहीं होगा एवं आवश्यकता से अधिक धन को दान में देकर जनकल्याण में व्यय करेंगे तो वह सुखदायी होगा और अगर ऐसा नहीं किया तो वही धन आपका नाश कर देगा, क्योंकि वह धन आपको गलत रास्ते पर ले जायेगा। यही कारण है कि अनेक धनी लोगों की संतान नशा, व्यभिचार आदि में लिप्त होकर अपने जीवन को नष्ट कर देती है।

वेद में व्यक्ति को धनी होने के साथ साथ विद्वान् होने अथवा विद्वान् का सत्संग करने का भी सन्देश है। ऋग्वेद के मंडल 1 के अध्याय 15 में एक मंत्र है जिसका आशय है कि विद्वान् लोग अपनी धार्मिकता और सदाचार से न केवल अपने, अपितु धनी के धन आदि पदार्थों और आचरण की रक्षा करते हैं। इसका एक अर्थ यह भी है कि विद्या से सभी प्रकार की सम्पदा की रक्षा होती है। इसलिए यह सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वे विद्या के ग्रहण और प्रचार प्रसार में अवश्य भागी बनें, जिससे न केवल सभी मनुष्य विद्वान् होकर धार्मिक बनें अपितु सभी की रक्षा हो सके।

आज समाज का अधिक से अधिक वर्ग केवल धन और संसाधन प्राप्ति के पीछे भाग रहा है। इस भागदौड़ में वह ज्यादा से ज्यादा धन कमाने की इच्छा में अधार्मिक एवं भ्रष्ट आचरण भी करने लगा है। विद्या से सुशोभित सज्जन केवल पवित्र धन की इच्छा रखता है। ऐसा धन ही जीवन में सुख को देने वाला है। विद्या व्यक्ति को निर्दयी, भ्रष्टाचारी, पापी, चोर आदि बनने से बचाती है। इसलिए केवल धन की ही इच्छा न करे अपितु विद्या की भी प्राप्ति की चेष्टा रखे। वेद कभी भी निर्धन रहने का सन्देश नहीं देते अपितु सदा पवित्र धन की कामना करने का आदेश देते हैं।

thearyasamaj.org

धर्म की आवश्यकता व राजनीति से संबंध

□कृपाल सिंह वर्मा २५३ शिवलोक, कंकरखेड़ा मेरठ-९९२७८८७७८८

हमारे द्वारा किया कर्म हमारे मन, बुद्धि तथा शरीर तीनों को प्रभावित करता है। इसलिए महाराज मनु ने कहा है कि रोज थोड़ा-थोड़ा पुण्य करने से व्यक्ति पुण्यवान हो जाता है। बूंद-बूंद कर भरे सरोवर।

धर्म क्या है?

वैशेषिक दर्शन में कहा है 'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि सः धर्मः'' जिन कार्यों से मनुष्य उन्नति करता है तथा अन्त में मोक्ष को प्राप्त करता है वे सब धर्म हैं। मीसांसा दर्शन कहता हे कि-'चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः' जिन कार्यों के करने की प्रेरणा परमपिता परमेश्वर ने वेदों में की है वे सब धर्म हैं। महाराज मनु ने कहा है-

वेद स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतत् चतुर्विधं प्राहु, साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्।।

जो वेद, स्मृति तथा सदाचार के अनुकूल है तथा अपने आत्मा को प्रिय लगता हो वह धर्म है। इसके लक्षण हैं-

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रिय निग्रह।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

कहा भी है-'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।

धर्म की आवश्यकता

प्रत्येक व्यक्ति दुःख से छूटना चाहता है तथा सुख को प्राप्त करना चाहता है। धर्म सुख का मूल कारण है तथा अधर्म दुःख का मूल कारण है। कहा है-'छिन्ने मूले वृक्षो नश्यति' तथा 'पापे क्षीणे दुःखं नश्यति।' अधर्म रूपी जड़ों को काटने से दुःख रूपी वृक्ष सूख जाता है।

चार पुरुषार्थ : धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

धर्म से अर्थ का संचय करो, धर्म तथा अर्थ से अपनी पवित्र कामनाओं को पूरा करो, कामनाओं में सर्वोच्च कामना परम आनन्दमय मोक्ष को प्राप्त करो। यही परम पुरुषार्थ है।

धर्म मनुष्य का रक्षक है-

'धर्मो रक्षति रक्षितः।' धर्म उसकी रक्षा करता है जो धर्म की रक्षा करता है। जब अन्त समय आता है तो हम बिल्कुल अकेले हो जाते हैं। उस समय हमारा धन तथा सम्बन्धी दोनों साथ छोड़ देते हैं। उस समय आत्मा की रक्षा कौन करता है-''यथाकर्मम् यथा श्रुतम्'' उस समय हमारे द्वारा संचित धर्म तथा हमारे द्वारा संचित विद्या, ये दोनों ही हमारी रक्षा करते हैं। ज्ञान एवं कर्म के संस्कार। संस्कार क्या है? कुम्हार दण्ड से चाक को घुमाता है। दण्ड को कुम्हार थोड़ी देर बाद हटा लेता है। लेकिन चाक फिर भी घूमता रहता है, क्योंकि इसमें गति का संस्कार उत्पन्न हो गया है। जब तक यह संस्कार रहेगा चक्र घूमता ही रहेगा। मक्की के खेत में कौए उड़ाने वाला गोफिये से उस दिशा में घुमाकर पत्थर फेंकता है जिस ओर कौए मक्की को खा रहे हैं। गोफिये से छूटने के पश्चात् पत्थर सीधा उसी दिशा में जाता है, जहाँ कौए मक्की को खा रहे हैं। मित्रो! ठीक इसी प्रकार हमारे ज्ञान व कर्म के संस्कार हमारे शरीर से निकले आत्मा को ठीक उसी दिशा की ओर ले जाते हैं जिस दिशा में हम जीवन भर चले हैं। संस्कार अपनी दिशा नहीं बदलते। आपको तो केवल यह निश्चय करना है कि आपको किस दिशा में जाना है। धर्म की दिशा में जाना है अथवा अधर्म की दिशा में जाना है, सब कुछ आपके हाथ में है।

कर्मफल सिद्धांत-

'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।' पुण्य कर्म हमें स्वतन्त्रता की ओर, पाप-कर्म हमें परतन्त्रता की ओर ले जाते हैं। जीव कर्म करने में अपने सामर्थ्य के अनुसार स्वतंत्र है, परन्तु उनका फल भोगने में परतन्त्र होता है। जो अशुभ कर्म हम कर चुके, उनके जाल में जकड़े हुए ही हम स्वतन्त्र रुप से कार्य करते हैं। कर्मों के फलीभूत होने की गति अत्यंत गहन है। एक कर्म का फल अनेक बार अनेक प्रकार से मिल सकता है तथा बहुत से कर्म जुड़कर भी एक फल दे सकते हैं। कर्म अपने समय पर ही फलीभूत होते हैं, समय से पहले नहीं। मनुष्य अपने कर्मों से जकड़े होकर महाविनाश स्थल की ओर चले जाते हैं। हमें ऐसा लगता है कि इन्हें बिना कुछ किये इतना बड़ा दुःख मिल गया है। हमारे द्वारा किया कर्म हमारे मन, बुद्धि तथा शरीर तीनों को प्रभावित करता है। इसलिए महाराज मनु ने कहा

thearyasamaj.org

है कि रोज थोड़ा-थोड़ा पुण्य करने से व्यक्ति पुण्यवान हो जाता है। बूंद-बूंद कर भरे सरोवर।

राजनीति का धर्म से सम्बन्ध

राजनीति तथा धर्म में कोई अन्तर नहीं है। राजधर्म को ही राजनीति कहते हैं। चार वर्ण हैं ये हमेशा से हैं तथा हमेशा रहेंगे। ये हैं- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। ये वर्ण कर्म के आधार पर हैं, जन्म के आधार पर नहीं।

जो व्यक्ति पढ़ने-पढ़ाने का कार्य करते हैं, उन्हें ब्राह्मण कहते हैं। जो व्यक्ति देश की रक्षा का कार्य करते हैं, देश की सेवा का कार्य करते हैं, उन्हें क्षत्रिय कहते हैं। जो व्यक्ति कृषि व्यापार आदि करते हैं, उन्हें वैश्य कहते हैं। जो व्यक्ति बिना पढ़े लिखे हैं और इन ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य की सहायता का कार्य करते हैं, उन्हें शूद्र कहते हैं।

जैसे किसी परिवार में चार लड़के हैं। उनमें से एक पढ़ने-पढ़ाने का कार्य करता है, दूसरा देश की रक्षा करने वाला सैनिक है। तीसरा कृषि तथा व्यापार करता है। चौथा अनपढ़ रह गया। वह पूरे परिवार की सेवा करता है तो समझिये उस परिवार में चारों वर्ण मौजूद हैं।

भजन

रचयिता:
स्व० महाशय मौजीराम जी,
रोहतक (मिसरी वाले)

नर तन चोला पाके ईश्वर को गया भूल।

गर्भ के अन्दर जग रौवे था- रो रो ईश्वर को मोहवे था।
बाहर का मार्ग टोहवै था, अब पड़ी तेरी अकल पै धूल।
मतिमन्द दुर्गन्ध में बंध था जब किया था भजन का रूल।

बचपन मे तूने उमर गुजारी- आई जवानी फिर लजमारी,
मोह ममता में फंस गया भारी तेरे गड़ी मार्ग में शूल।
अरे अनारी सारी गुजारी जिन्दगी फिजूल।।

तू कह रहा है मेरा मेरा-इस दुनिया में क्या है तेरा।
काल का तेरे सिर पै घेरा, लिये खड़ा त्रिशूल।
भाई बहन बेचैन हुए तेरे गंगा पहुंचाए फूल।।

मौजीराम तैने समझावै- रहा सहा क्यों समय गंवावै
आखिर को फिर तुझे सजा मिले कर्मों के अनुकूल।
ओम का नाम जपा कर बंदे क्यों बोले ऊल जलूल।।

जिस प्रकार ब्राह्मण के कर्तव्यों को ब्राह्मण-धर्म कहते हैं, क्षत्रियों के कर्तव्यों को क्षात्र-धर्म कहते हैं। वैश्यों के कर्तव्यों को वैश्य-धर्म कहते हैं। शूद्र के कर्तव्यों को शूद्र धर्म कहते हैं, इसी प्रकार राजधर्म को राजनीति कहते हैं। जिस प्रकार रोपे गये पौधे के चारों ओर कांटों की बाड़ लगा देते हैं, इसी प्रकार शत्रुओं से देश को बचाने के लिए राजनीति की बाड़ लगा दी जाती है। राजधर्म अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मनु ने मनुस्मृति में, महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में अलग से राजधर्म का व्याख्यान किया है।

ब्राह्मण सर्वोच्च वर्ण है। सबसे ऊँचे आसन पर विराजमान होता है। परन्तु राजसूय यज्ञ में राजा का आसन ब्राह्मण से ऊपर होता है। जिसका अर्थ है कि संकट काल में ब्राह्मण भी राजा के आदेशों का ही पालन करेगा।

ब्राह्मण ज्ञान से बड़ा होता है। क्षत्रिय बल से बड़ा होता है। वैश्य धन से बड़ा होता है तथा शूद्र आयु से ही बड़ा होता है। ब्राह्मण ज्ञान प्रदान करके समाज की रक्षा करता है। क्षत्रिय बल का प्रयोग करके देश की रक्षा करता है। वैश्य धन देकर देश की रक्षा करता है तथा शूद्र सब की सेवा करके देश-समाज की रक्षा करता है।

संन्यास धर्म तथा राजधर्म में अन्तर :-

ब्राह्मण धर्म तथा राजा के धर्म में बड़ा भारी अन्तर होता है। यथा-

क-सन्तोषी राजा तथा असन्तोषी ब्राह्मण दोनों ही नष्ट हो जाते हैं। सन्तोषी राजा विनश्यति। असन्तोषी ब्राह्मण विनश्यति।। यदि राजा देश की सीमाओं से सन्तुष्ट हो गया तो पड़ौसी राजा अपने सीमाओं का विस्तार कर लेता है। तिब्बत लेने के बाद भी चीन सन्तुष्ट नहीं हुआ। १९६२ में भारत पर आक्रमण किया। यदि ब्राह्मण सन्तुष्ट नहीं है तो धन के लालच में वह वैश्य बन जाता है।

(ख) क्षमा का गुण ब्राह्मण के लिए वरदान है, परन्तु राजा के लिए अभिशाप है। राजा का कर्तव्य है कि अपराधी को उचित दण्ड देकर दण्डित करे, क्षमा न करे। अपराधी को दण्ड न मिलने से अपराध बढ़ते हैं। लेकिन क्षमा का गुण ब्राह्मण का आभूषण होता है। महर्षि दयानन्द ने विष देने वाले को भी क्षमा कर दिया था।

(ग) अहिंसा ब्राह्मण का धर्म है, राजा का धर्म नहीं। आचार्य चाणक्य ने कहा है कि दण्ड ही राज्य को चलाता है। यदि घोर अपराधियों को राजा मृत्यु की सजा न दे तो अपराध इतने बढ़ जायेंगे कि हाहाकार मच जायेगा। लेकिन ब्राह्मण वैर भाव छोड़ के सब प्राणियों के कल्याण का ही उपदेश करता है। इस प्रकार राजनीति धर्म का ही एक पक्ष है।

thearyasamaj.org

बेटी बचाओ

❐आनन्द प्रकाश आर्य,
जौरासी (समालखा) पानीपत।

राम नहीं बिना कौशल्या और अंजना बिना हनुमान नहीं,
भरत नहीं बिना शकुन्तला और देवकी बिना घनश्याम नहीं।
गार्गी मैत्रेयी जैसी विदुषी पन्नाधाय सी त्यागी माता,
लक्ष्मीबाई दुर्गावती वीरांगना जिनसे दुश्मन पार ना पाता।
विद्यावती ने दिया भगतसिंह इस राष्ट्र की भव्य इमारत में।
कल्पना, बछेन्द्री, सन्तोष व ऊषा हुई हैं मेरे भारत में।
चित्तौड़ की पद्मिनी सतीत्व रक्षार्थ थी चिता जलाकर लेटी,
ऊपर जिनका जिक्र किया है, वे सब है भारत की बेटी।।

भगवान का प्रत्येक कार्य महत्त्वपूर्ण है। इसलिए उसने जब अन्य प्राणियों की तरह नर-नारी का जोड़ा बनाया, तो निश्चित है कि दोनों को ही बराबर बनाया। संसार में व्यवहार में देखा जाये तो नारी नर से अधिक महत्त्व रखती है और वेद आदि शास्त्रों में उसे पूजनीया कहा गया है। महर्षि मनु ने भी कहा है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

लोक व्यवहार में भी यज्ञादि पवित्र कार्य में नारी का होना अत्यन्त आवश्यक है। नारी ही नर को जन्म देती है। वेद ने कहा है- 'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ' अर्थात् स्त्री ही ब्रह्मा है।

वैदिक काल से लेकर महाभारत काल तक नारी के लिए शिक्षा-दीक्षा की समुचित व्यवस्था थी। अलग-अलग गुरुकुल थे, जहाँ से विकास कर वे युवतियाँ गृहस्थ का समाज का और राष्ट्र का दायित्व बखूबी निभाती थीं। महाभारत युद्ध के बाद यह देश रसातल में चला गया। अज्ञानी धूर्तों ने धर्म की ठेकेदारी लेकर मनमाने व्यवहार चला दिये। नारी को शिक्षा-दीक्षा, ईश्वर उपासना व वेदादि के पठन-पाठन से वंचित कर दिया गया। विदेशी राजाओं की पराधीनता के कारण बाल विवाह व सती प्रथा जैसी कुरीतियों ने नारी-जीवन को निराशा से भर दिया। इनसे भी अधिक भयंकर कुप्रथा आई कन्या वध की। पैदा होते ही बेटियों को गला घोंटकर मारा जाने लगा। सबला नारी अबला बनकर आंसू बहाने लगी। अपनों के अत्याचारों से पीड़ित होकर निकलने वाली उनकी आहों से देश अधोगति को प्राप्त हो गया। स्वामी दयानन्द, राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फूले जैसे समाज सुधारकों ने इनके आंसू पोंछने का प्रयास किया। पुनः स्त्री शिक्षा के लिए विद्यालय गुरुकुल खोले जाने लगे, पुनर्विवाह शुरू कर सती प्रथा पर रोक लगाई गई। पतझड़ से सूने जीवन में पुनः वसन्त का आगमन हुआ।

परन्तु सभ्यता का चोगा ओढ़े आधुनिक मानव ने ऐसी मशीनों का आविष्कार किया कि कन्या को जन्म भी न लेने दिया। माँ के गर्भ से बढ़कर सुरक्षित स्थान कहाँ हो सकता है? पर नासमझ माँ-बाप के कारण वह स्थान भी कन्या के लिए श्मशान जैसा डरावना हो गया है। पढ़े-लिखे समाज की मूर्खता व निर्दयता के कारण देश में लिंग अनुपात बिगड़ गया है। देश में बढ़ते दुराचार, बलात्कार के अनेक कारणों में यह भी मुख्य कारण बना है।

जब अपने माँ-बाप ही बेटी की हत्या करवाएं, तो इसकी शिकायत करने बेटी कहाँ जाये? जिस डॉक्टर को भगवान कहा जाता हो, जब वही कुछ रूपये लेकर कन्या के खून से हाथ रंगे, तो बेटी किससे शिकायत करे? अपने बेटों की कृतघ्नता को देखते जानते हुए भी यह पापी समाज क्यों बेचारी बेटियों को जन्म भी नहीं लेने देता? हम माँ चाहते हैं, पत्नी चाहते हैं, बहन चाहते हैं पर बेटी क्यों नहीं? सोचिये, ये सब बेटी के ही तो रूप हैं।

महर्षि दयानन्द ने माँ को पहला गुरु माना है। आज बेटियाँ ज्ञान में, विज्ञान में, समाज में, राज-काज में, खेल में, सेना में बेटों से कहीं पीछे नहीं हैं, अपितु कहीं आगे ही हैं। सरकार ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का जो अभियान चलाया, हम देश के सजग नागरिक बनकर उसमें सहयोग करें। इसी में हमारा, हमारे लड़कों का और देश का भविष्य सुरक्षित रह सकता है।

आओ एक स्वर में आवाज लगायें।
बेटी बचायें और बेटी पढ़ायें।।

thearyasamaj.org

जमाने में क्या बदला?

कोई आदमी अपने दो बच्चों के लिए पाँच मंजिला पचास कमरों का मकान बना दे तो कितने कमरों में सोयेंगे वे दोनों! कहा जाए कि आने वाली संतति के लिए--, तो क्या आने वाली संतान अपाहिज पैदा होगी जो कुछ बना नहीं पाएगी?

❐ दाताराम आर्य 'आलोक' ग्राम बुटेरी, तहसील बानसूर, जिला अलवर, राजस्थान

जब लोगों से सुनता हूँ कि भाई जमाना बदल गया, मुझे बड़ा दुःख होता है। कुछ बदला हुआ तो लगता नहीं। हो सकता है मेरी सोच छोटी हो। स्वानुभूति यही है कि पेड़ों पर प्रतिवर्ष उसी प्रकार के पत्ते आते हैं जैसे पहले आते थे। नीम को हमेशा कड़वा ही पाया। कीकर बबूल ने भी काँटों का साथ नहीं छोड़ा। हमारी गाय भैंसें भी नहीं बताती कि जमाना बदल गया, अब हम हरे रंग का दूध दिया करेंगी। लोग यह भी नहीं बताते कि पहले की अपेक्षा सूर्य कुछ ठण्डा व चाँद कुछ गरम लगता है। दिसम्बर जनवरी में ठण्ड व मई-जून में गर्मी बिना बुलाए आ जाती हैं, इन्हें सरकार का भी डर नहीं लगता। बताओ फिर क्या बदला?

हाँ, एक जगह बदलाव की गुंजाईश दिखाई देती है, मनुष्य में। जिन्हें पहले जोर देकर मनुष्य कहा जाता था उनमें कुछ 'मनुष्य से' ही रह गए हैं। हमें स्वयं को बनाना था अन्दर से, पर हम बन रहे हैं बाहर से। भवन अन्दर से मिट्टी, गर्द, मकड़ी के जालों से भरा पड़ा है, बाहर से पुताई हो रही है। वाह रे मनुष्य!

वस्त्र धारण करना मानव को अन्य जीव-जन्तुओं से अलग करता है। यह सभ्यता और बुद्धि की उत्कृष्टता का द्योतक है। लेकिन आज के वस्त्र कमाल के हैं। नौजवानों की पेन्ट शेयर-बाजार के सूचकांक की तरह लगातार कमर से नीचे जा रही है। टी-शर्ट पर छपे डरावने चित्र दिमागी दिवालिएपन व क्रूर मानसिकता का चित्रांकन करते हैं। कई हमारी बहन बेटियाँ भी काले चश्मे से आँखें ढ़ककर इस रूप में निकलती हैं कि सिर शर्म से झुक जाता है। ऋषियों की सुदृढ़ गौरव-गरिमा लगातार लचकीली होती जाती है।

विद्यालय-महाविद्यालयों का भाषा सौन्दर्य देखकर तो भूखे पेट भी उल्टी आने को होती है। इनका मानना है कि आपस में गाली-गलौच से प्रेम बढ़ता है। मैं भयभीत होकर ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे बच्चों के मनो-मस्तिष्क में कभी माता-पिता के साथ प्रेम बढ़ाने का सद्विचार न पैदा हो जाए। यदि ऐसा हो गया तो प्राचीन संस्कृति व इतिहास का नाम ही लुप्त हो जाएगा।

पहले लोग जंगल में रहकर भी लोगों के लिए मंगल कामना करते थे, आज नगरों में रहकर भी विनाश चाहते हैं। पहले लोगों के घर बेशक कच्चे थे, लेकिन उनके वचन, जीवन के सिद्धांत पक्के थे। कपड़े फटे-पुराने लेकिन संयम मजबूत था। आज मकान लोहे-सिमेन्ट के बने हैं, लेकिन जीवन, संयम, वचन सब कच्चे हैं, एकदम कच्चे। जीभ हमेशा पिज्जी, बर्गर, चाट माँगती है, हाँ बोलकर ना बोल जाती है। दिशाविहीन जीवन संयम क्या करेंगे, जब शक्ति ही नहीं! संयम शक्ति का होता है।

आज मनुष्य किसी को देखकर मुस्कुरा नहीं सकता। पाँच भाईयों के साथ बैठना पसंद नहीं, बिल्कुल एकाकी हो गया। एकाकी होना बुरा नहीं, यदि ऋषियों की तरह से हो। ओ मनु की सन्तानो! याद रखना- हँसने बोलने का गुण प्रभु ने केवल मनुष्य को ही दिया है, यदि इस गुण का सदुपयोग नहीं किया तो क्या किया?

तुम्हारे पास गाडियाँ कितनी ही क्यों न हों, कम ही रहेंगीं। मकान कितने ही क्यों न हों, कमी रहेगी। धन-दौलत-वैभव से आज तक कोई पूर्ण सन्तुष्ट नहीं हो पाया। यह भी ध्रुव सत्य है कि अति का संग्रह करने वाला सदुपयोग भी नहीं कर पाया। कई बार सुना गया है कि अमुक राजा नवाब-शहंशाह के शौचालय में भी हीरे जड़े थे। बुद्धिजीवियो! ऐसा आदमी चाहे भूमण्डल का स्वामी बन जाए लेकिन समझदार नहीं कहा जा सकता। समझदार व्यक्ति ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। लोगों के अधिकार छीनने वाला तो मनुष्य कहलाने का अधिकार पहले ही खो बैठता है। कोई आदमी अपने दो बच्चों के लिए पाँच मंजिला पचास कमरों का मकान बना दे तो कितने कमरों में सोयेंगे वे दोनों! कहा जाए कि आने वाली संतति के लिए--, तो क्या आने वाली संतान अपाहिज पैदा होगी जो कुछ बना नहीं पाएगी?

अब उस बिन्दु की ओर विचार करते हैं जो जमाने को गेंद की तरह घुमा रहा है। कहते हैं- बेटा बिगड़ गया, शराब पीता है। लेकिन बेटा कहता है- जमाना बदल गया,

thearyasamaj.org

माडर्न जमाना है– सब चलता है। यह कहने की उसकी हिम्मत क्यों हुई? क्योंकि उसने बाप को पीते हुए देखा। बेटी घर से बेढंगे कपड़े पहन कर क्यों निकली? क्योंकि सीने तारिकाओं की नकल करने की शुरूआत माँ ने की थी। फिल्मी दुनिया वाले वे कपड़े पहनते हैं अभिनय मंच पर, और हम पहनते हैं उनको परिवार में! ये चोर, जुआरी, बदमाश, शराबी, कहाँ से आते हैं? सब परिवारों से आते हैं।

पहले लोगों में परिवार, ग्राम, देश की छाप होती थी। अपनी मान–प्रतिष्ठा, गौरव–गरिमा का ध्यान होता था। आज उनके खो जाने का कारण है कुसंस्कार। बिना संस्कार के परिवार, समाज, संसार व सरकार कुछ भी नहीं चल सकता। संस्कार मां देती है जो आजकल जीन्स पहनने वाली मम्मी बन गई– आँचल उड़ गया। हम आर्यावर्त की पहचान=पवित्र पहचान– विद्या, ज्ञान, विचार व चरित्र को खोते जा रहे हैं। संसार में जो भी महान बना व चरित्र के कारण बना। चरित्र हीरे का हथौड़ा है, जिसकी चोट से खोट चकनाचूर हो जाते हैं।

दूसरों को शिक्षा देने से पहले स्वयं को बनना होता है। हम किसी को बना नहीं सके, क्योंकि हम स्वयं ही नहीं बन पाए। हम गुणहीन होने के कारण समय–प्रवाह के साथ धीरे–धीरे निर्बल होते जा रहे हैं। बुराई के आगे नत मस्तक होकर कह रहे हैं कि जमाना बदल गया। मेरे लेख को पढ़ कर कोई मुझे बुरा भी कहे तो क्या डर है? क्योंकि जमाना बदल गया।

प्रेरक कथा

हीरों का हार

विजय आर्य, मोहाली

एक रानी नहाकर अपने महल की छत पर बाल सुखाने के लिए गई। उसने अपना हीरों का हार वहीं आले पर रख दिया और बाल संवारने लगी। इतने में एक कौवा हार को चमकीली चीज समझकर लेकर उड़ गया। एक पेड़ पर बैठ कर उसे खाने की कोशिश की, पर खा न सका। अंततः हार को उसी पेड़ पर छोड़ कर उड़ गया।

उधर रानी का ध्यान अपने हार पर गया, पर वह तो वहाँ था ही नहीं। इधर–उधर ढूंढा, परन्तु व्यर्थ। रोती–धोती वह राजा के पास पहुंची। अब तो राजा के आदेश पर सब हार को ढूंढने लगे। सिपाही, प्रजा, कोतवाल– सब खोजने में लग गए। राजा के लिए वैसा दूसरा हार बनवा देना मामूली बात थी, पर रानी तो उसी हार के लिए अड़ी हुई थी। राजा ने हार ढूंढकर लाने वाले के लिए बहुत बड़े पुरस्कार की घोषणा कर दी।

अब तो होड़ लग गई प्रजा में। ढूंढते–ढूंढते अचानक वह हार किसी को एक गंदे नाले में दिखा। हार तो दिखाई दे रहा था पर पानी काला था। उसमें से बदबू आ रही थी। एक सिपाही कूदा। इधर–उधर बहुत हाथ मारा, पर कुछ नहीं मिला। पता नहीं कहां गायब हो गया। पानी ठहरा तो हार फिर दिखाई देने लगा। अब कोतवाल भी कूद गया। दो को कूदते देखा तो कुछ उत्साही प्रजाजन भी कूद गए। फिर मंत्री कूदा। इस तरह उस नाले में भीड़ लग गई। लोग आते रहे और अपने कपड़े निकाल–निकाल कर कूदते रहे। पर हार मिला किसी को नहीं। कोई भी कूदता, तो वह गायब हो जाता। जब कुछ नहीं मिलता, तो वह निकल कर दूसरी तरफ खड़ा हो जाता। सारे शरीर पर बदबूदार गंदगी, भीगे हुए खड़े हैं। दूसरी ओर दूसरा तमाशा– बड़े–बड़े जाने–माने ज्ञानी, मंत्री सब में होड़ लगी है– मैं जाऊंगा पहले।

राजा को खबर लगी तो वह भी कूद गया। इतने में एक संत गुजरे उधर से। उन्होंने देखा तो हंसने लगे, यह क्या तमाशा है? लोगों ने उन्हें सारी बात बताई। हार नाले में दिखाई दे रहा है। लेकिन जैसे ही लोग कूदते हैं, वह गायब हो जाता है। किसी के हाथ नहीं आता।

संत हंसने लगे, भाई! किसी ने ऊपर भी देखा? ऊपर देखो, वह टहनी पर लटका हुआ है। नीचे जो तुम देख रहे हो, वह तो उसकी परछाई है।

हार मिल गया। अब संत ने लोगों को समझाया– जिसके लिए हमारा हृदय व्याकुल होता है–वह सुख शांति और आनन्द रूपी हार क्षणिक सुखों के रूप में परछाई की तरह दिखाई देता है और यह महसूस होता है कि इस को हम प्राप्त कर लेंगे। अगर हमारी यह इच्छा पूरी हो जाएगी तो हमें शांति मिल जाएगी, हम सुखी हो जाएंगे। परन्तु जब हम उसमें कूदते हैं, तो वह सुख और शांति प्राप्त नहीं हो पाती। इसलिए सभी संत–महात्मा हमें यही संदेश देते हैं कि वह शांति, सुख और आनन्द रूपी हीरों का हार, जिसे हम संसार में परछाई की तरह पाने की कोशिश कर रहे हैं, वह हमारे अंदर ही मिलेगा, बाहर नहीं।

thearyasamaj.org

ऋषि दयानन्द के आदर्श : दो नीति श्लोक

❑डॉ० भवानीलाल भारतीय ३/१५ शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

इन विपरीत स्थितियों में भी वे निर्विकार, अविचल तथा स्थिरमति रहे। गीता कथित स्थितप्रज्ञ व्यक्ति के लक्षण उनमें पूर्णतया घटते हैं जब वे सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, जय-पराजय में निर्विकल्प निर्विकार रहते हैं।

आलोचनाओं के मध्य यह चिन्तन अपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग बने रहने की प्रेरणा देता है।

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रंथों में यों तो शतशः नीति श्लोक उद्धृत किये हैं किन्तु इनमें दो श्लोकों की अपनी विशिष्टता है। संस्कृत में नीति शिक्षा परक ग्रंथों का बाहुल्य है। मनुस्मृति के अतिरिक्त विदुर-नीति (महाभारतान्तर्गत) शुक्र-नीति, कामन्दक नीतिसार, चाणक्य-नीति आदि की गणना प्रमुख नीति-ग्रंथों में होती है। ऋषि दयानन्द के जीवन और कर्तव्यों के निर्धारण में महाराज भर्तृहरि के नीति शतक (संख्या ८५) के निम्नलिखित श्लोक का प्रमुख स्थान रहा है। इसे महाराज ने स्वयं सत्यार्थप्रकाश की समाप्ति पर लिखे गये स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में उद्धृत किया है। प्रासंगिक श्लोक है-

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा।
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

नीति निपुण लोग हमारी निन्दा करें या स्तुति करें, लक्ष्मी आये या चली जाये। आज ही मृत्यु हो या युगों तक हम जीवित रहें। वस्तुतः धैर्यवान् पुरुष न्याय के मार्ग से कदापि विचलित नहीं होते।

ऋषि ने इस श्लोक में कथित तीनों बातों को अपने जीवन में अक्षरशः उतारा था। उनके काल में तथा उनके बाद भी उनके निन्दकों की कभी कमी नहीं रही। विरोधी पण्डितों ने उन्हें ईसाई प्रचारक, गुप्त ईसाई, धर्म विनाशक, क्या क्या नहीं कहा? अनेक स्थानों पर विरोधियों ने उन पर ईंट पत्थर बरसाये, गाली गलौच किया। पूना में तो उनका अपमान करने की हद हो गई, जब दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने उनके सम्मान में निकाली शोभा यात्रा के समानान्तर गधे का जुलूस निकाला और उनके प्रति अवाच्य वर्षण किया। तथापि इन विपरीत स्थितियों में भी वे निर्विकार, अविचल तथा स्थिरमति रहे। गीता कथित स्थितप्रज्ञ व्यक्ति के लक्षण उनमें पूर्णतया घटते हैं जब वे सुख-दुःख, लाभ-अलाभ, जय-पराजय में निर्विकल्प निर्विकार रहते हैं।

इसके विपरीत उनके जीवन काल में उनकी प्रशंसा भी कम नहीं हुई। राजा-प्रजा ने तो उनको सराहा ही किन्तु उनकी कीर्ति-सुरभि सात समुद्र पार अमेरिका तक पहुंची जब थियोसोफी के संस्थापकों ने उनके विचार जाने और उनसे प्रत्यक्ष भेंट करने के लिए सात समुद्र पार कर भारत में आये। निष्पक्ष राजनेताओं और प्रशासकों ने उन्हें आदर दिया तथा सुधारक समुदाय (ब्रह्म नेता देवेन्द्रनाथ ठाकुर केशवचन्द्र सेन) आदि ने उन्हें भारत का प्रमुख धर्म सुधारक तथा समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाला समझा।

जहाँ तक धन सम्पत्ति का सम्बन्ध है, इनके प्रति उनमें किसी प्रकार का मोह या आसक्ति नहीं थी। अपने धनाढ्य पिता का सम्पन्न घर छोड़कर वे वैराग्य पथ के पथिक बने थे। उन्होंने ऊखी मठ के महन्त द्वारा प्रस्तावित इस मठ के महन्त की गद्दी अस्वीकार कर दी। उदयपुर महाराणा द्वारा एकलिंग महादेव के मंदिर का अधिकार लेने के प्रलोभन को ठुकराते उन्हें एक क्षण भी नहीं लगा। जब काशी के पण्डितों ने इनसे आग्रह किया कि वे मूर्ति-पूजा का खण्डन छोड़ दें तथा बदले में शंकराचार्य की पीठ के अधिष्ठाता बन जायें तो इस प्रस्ताव को ठुकराने में उन्होंने देर नहीं की। सांसारिक वैभव से कन्नी काटने वाला ऐसा इन्सान तो फरिश्ता ही कहला सकता है।

जहाँ तक जीवन और मृत्यु का प्रश्न है, उनके प्राण हरण की अनेक चेष्टाएँ की गई, अनेक बार विष दिये गये। उन पर तलवार से प्रहार का दुस्साहस (द्रष्टव्य राव कर्णसिंह का प्रसंग) भी किया गया। अन्ततः आततायियों के षड्यंत्र के शिकार होकर उन्होंने अपनी जीवन लीला को समाप्त भी कर दिया, किन्तु अपने धर्म, सत्य और न्याय के पथ से कभी विचलित नहीं हुए। सचमुच उन्होंने भर्तृहरि के उक्त श्लोक में कथित आदर्श को अपने जीवन का आदर्श बना लिया था।

एक अन्य नीति श्लोक ने उन्हें प्रभावित किया वह

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

thearyasamaj.org

क्या द्रौपदी ने 'अंधे का अंधा' कहा था!

❐राजेशार्य आट्टा, ११६६, कच्चा किला, साढौरा (चलभाष : 9991291318)

प्रिय पाठकवृन्द! आदरणीय वैदिक विद्वान भी दूसरे विद्वानों की तरह अपने लेखों और प्रवचनों में लिखते कहते रहते हैं कि द्रौपदी ने दुर्योधन को 'अन्धे का अन्धा' कहा था। इसी कटु वचन के कारण महाभारत हुआ।

शिक्षा के लिए तो यह अच्छा है कि हम कड़वे वचन बोलने से बचें, पर क्या इससे हम द्रौपदी को असभ्य सिद्ध नहीं कर रहे हैं? और दुर्योधन ने जीवन भर बार-बार जो कड़वे वचन कहे, उनकी कोई चर्चा भी नहीं करता। यद्यपि रामायण में सीता ने भी अपने प्यारे देवर लक्ष्मण को बहुत कड़वे वचन कहे थे, पर वहाँ सीता के सामने अपने पति राम की सुरक्षा सर्वोपरि थी और सदा आज्ञाकारी रहा लक्ष्मण उनकी बात (राम को बचाने जाने की आज्ञा) नहीं मान रहा था। उसी भावावेश में कड़वा बोला गया था, ऐसा रामायण में लिखा हुआ है, पर अपने घर आए हस्तिनापुर के युवराज व अपने देवर दुर्योधन को द्रौपदी ने अन्धे का अन्धा कहकर मजाक उड़ाया हो, ऐसा महाभारत में कहीं नहीं लिखा।

जब दुर्योधन पाण्डवों के महल (इन्द्रप्रस्थ) में भ्रमित होकर ठोकरें खा रहा था, तब उसे देखकर हँस तो कोई भी सकता था, पर उसे अन्धे का अन्धा किसी ने भी नहीं कहा और द्रौपदी का तो वहाँ नाम भी नहीं है। देखिए-

जले निपतितं दृष्ट्वा भीमसेनो महाबलः।
जहास जहसुश्चैव किंकराश्च सुयोधनम्।।
वासांसि शुभान्यस्मै प्रददू राजशासनात्।
तथागतं तु तं दृष्ट्वा भीमसेनो महाबलः।।
अर्जुनश्च यमौ चोभौ सर्वे ते प्राहसंस्तदा।

अर्थात दुर्योधन को जल में गिरा देखकर भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और उनके सेवक हँस पड़े, जिसे असहनशील दुर्योधन सहन नहीं कर सका। राजा (युधिष्ठिर) के आदेश से उसे शुभ वस्त्र दिए गये थे। (अपने अपमान को दुर्योधन किसी तरह सहन कर गया।) यहाँ इतना ही लिखा हुआ है।

हाँ, दुर्योधन ने अपने पिता धृतराष्ट्र को पाण्डवों के विरुद्ध उकसाने के लिए (उनके वैभव से ईर्ष्या के कारण) अपने अपमान का वर्णन करते हुए अवश्य कहा था कि उसे (दुर्योधन को) जल में गिरा देखकर भीम, अर्जुन, श्रीकृष्ण, द्रौपदी और अन्य स्त्रियाँ हँसने लगीं। यहाँ ईर्ष्यालु और कपटी दुर्योधन ने श्रीकृष्ण व द्रौपदी का नाम जानबूझ कर घसीटा है क्योंकि महाभारत में श्रीकृष्ण बहुत गम्भीर व आदर्श व्यक्तित्व का धनी है। द्रौपदी यदि हँसी थी, तो इतना बुरा नहीं था क्योंकि वह उसका देवर था, पर द्रौपदी इतनी अशिष्ट नहीं थी कि अपने बड़े ससुर धृतराष्ट्र के लिए ऐसी भाषा (ऐसे शब्दों) का प्रयोग करती। दुर्योधन ने भी उसके केवल हँसने की बात कही है। देखिये-

कृतां विन्दुसरोरत्नैर्मयेन सफाटिकच्छदाम्।
अपश्यं नलिनीं पूर्णामुदकस्येव भारत।। (सभा पर्व ५०-२५)
वस्त्रमुत्कर्षति मयि प्राहसत् स वृकोदरः।
शात्रोर्ऋद्धि विशेषेण विमूढं रत्नवर्जितम्।।२६
तत्र स्म यदि शक्तः स्यां पातयेऽहं वृकोदरम्।
यदि कुर्यां समारम्भं भीमं हन्तुं नराधिप।।२७
शिशुपाल इवास्माकं गतिः स्यान्नात्र संशयः।
सपत्नेनावहासो में स मां दहति भारत।।२८
पुनश्च तादृशीमेव वापीं जलजशालिनीम्।
मत्वा शिलासमां तोये पतितोऽस्मि नराधिप।।२९
तत्र मां प्राहसत् कृष्णः पार्थेन सह सुस्वरम्।
दौपदी च सह स्त्रीभिर्व्यथयन्ती मनो मम।।३०

'भारत! विन्दु सरोवर से लाए हुए रत्नों द्वारा मयासुर ने एक कृत्रिम पुष्करिणी का निर्माण किया था, जो स्फटिक मणि की शिलाओं से आच्छादित है। वह मुझे जल से भरी हुई सी दिखाई दी। भारत! जब मैं उसमें उतरने के लिए वस्त्र उठाने लगा, तब भीमसेन ठठाकर हँस पड़े। शत्रु की विशिष्ट समृद्धि से मैं मूढ सा हो रहा था और रत्नों से रहित तो था ही। यदि मैं भीम को मारने का प्रयास करता तो शिशुपाल की तरह मेरी अवस्था हो जाती, इसमें कोई सन्देह नहीं है। फिर वैसी ही कमलों वाली बावड़ी को पत्थर समझकर मैं पानी में गिर गया। वहाँ श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ मेरी ओर देखकर जोर जोर से हँसने लगे। स्त्रियों सहित द्रौपदी भी मेरे हृदय में चोट पहुँचाती हुई हँसी थी।'

यहाँ दुर्योधन ने यह नही कहा है कि द्रौपदी ने उसे 'अन्धे का अन्धा' कहा था। वास्तव में तो वह पाण्डवों की

thearyasamaj.org

स्मृद्धि से ईर्ष्या कर रहा था। यह बात उसने यहाँ कही भी है और इससे पूर्व भी कहा है-'पिता जी! मेरी धन सम्पत्ति तो बहुत ही साधारण है। इससे मुझे सन्तोष नहीं है। मैं युधिष्ठिर की सौभाग्य-लक्ष्मी और उनके अधीन सारी पृथ्वी देखकर बेचैन हो रहा हूँ।'

और उस सम्पत्ति को हड़पने के लिए ही जुआ खेला गया था, क्योंकि दुर्योधन पाण्ड़वों को युद्ध में तो जीत ही नहीं सकता था। द्रौपदी को महाभारत युद्ध का दोष देने वालों को सोचना चाहिए कि इस घटना से पूर्व भीम को विष पिलाया जा चुका था। हस्तिनापुर का राज्य बाँटा जा चुका था। फिर बेचारी द्रौपदी को किस आधार पर दोषी ठहराया जा रहा है। दुर्योधन के इस वचन से भी भीम के प्रति क्रोध व्यक्त हुआ है, पर कल्पना करने वालों ने तो हद कर दी। 'अन्धे का अन्धा' तो उसे भीम जैसे उद्धत स्वभाव वाले ने भी नहीं कहा। देखिये-

भीमसेन तत्रोक्तो धृतराष्टात्मजेति च।
सम्बोध्य प्रहसित्वा च इतो द्वारं नराधिप।। (सभा० ५०-३५)

वैशम्पायन कहते हैं- महाराज! वहाँ भीमसेन ने उसे 'धृतराष्ट पुत्र' कहकर सम्बोधित किया और हँसते हुए कहा-'राजन् द्वार इधर है।' इसी को कोई 'अन्धे का अन्धा' होना मानता हो तो यह स्वार्थ (स्व अर्थ) सिद्ध करने वाली बात है। पिता या माता के नाम से पुकारना तो उस समय की सामान्य प्रथा थी। श्रीकृष्ण अर्जुन को कौन्तेय, पार्थ, पाण्डव आदि कहते थे। फिर भी यह तो स्पष्ट है कि ऐसा भी द्रौपदी ने नहीं कहा। क्योंकि द्रौपदी वहाँ थी ही नहीं। उपदेशक विद्वान् अपने कथन की सिद्धि में दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण आदि के अहंकारी कटुवचनों का प्रयाग करें, तो निर्दोष द्रौपदी को बदनाम करने का पाप भी नहीं लगेगा।

बोध कथा

मांस का मूल्य

मगध के सम्राट् श्रेणिक ने एक बार अपनी राज्य-सभा में पूछा 'खाद्य समस्या को सुलझाने के लिए सबसे सस्ती वस्तु क्या है?' मंत्रि-परिषद् तथा अन्य सदस्य सोच में पड़ गये। चावल, गेहूं आदि पदार्थ तो बहुत श्रम के बाद मिलते हैं और वह भी तब जबकि प्रकृति का प्रकोप न हो। ऐसी हालत में अन्न तो सस्ता हो नहीं सकता। शिकार का शौक पालने वाले एक अधिकारी ने सोचा कि मांस ही ऐसी चीज है, जिसे बिना कुछ खर्च किये प्राप्त किया जा सकता है। उसने मुस्कराते हुए कहा, 'महाराज! सबसे सस्ता खाद्य पदार्थ तो मांस है। इसे पाने में पैसा नहीं लगता और पौष्टिक भी है।' सबने इसका समर्थन किया, लेकिन मगध का प्रधानमंत्री अभय कुमार चुप रहा। श्रेणिक ने टोका, 'तुम चुप क्यों हो? बोलो, तुम्हारा इस बारे में क्या मत है?' प्रधानमंत्री ने कहा, 'यह कहना कि मांस सबसे सस्ता है, सर्वथा अनुचित है। मैं अपने विचार आपके समक्ष कल रखूंगा। अगले दिन प्रधानमंत्री सीधे उस सामन्त के महल पर पहुंचे, जिसने सबसे पहले अपना प्रस्ताव रखा था। अभय ने द्वार खटखटाया। सामन्त ने द्वार खोला। इतनी रात गये प्रधानमंत्री को देखकर वह घबरा गया। स्वागत करते हुए आने का कारण पूछा। प्रधानमंत्री ने कहा, 'संध्या को महाराज श्रेणिक बीमार हो गए हैं। उनकी हालत खराब है। राजवैद्य ने उपाय बताया है कि किसी बड़े आदमी के हृदय का दो तोला मांस मिल जाय तो राजा के प्राण बच सकते हैं। आप महाराज के विश्वासपात्र सामन्त हैं। इसलिए मैं आपके पास आपके हृदय का दो तोला मांस लेने आया हूँ। इसके लिए आप जो भी मूल्य लेना चाहें, ले सकते हैं। कहें तो लाख स्वर्ण मुद्राएं दे सकता हूं।' यह सुनते ही सामन्त के चेहरे का रंग फीका पड़ गया। जब जीवन ही नहीं रहेगा तब लाख स्वर्णमुद्राएं भी किस काम आएँगी! उसने प्रधानमंत्री के पैर पकड़ लिये और अपनी तिजौरी से एक लाख स्वर्ण मुद्राएं देकर कहा कि इस धन से वह किसी और सामन्त के हृदय का मांस खरीद लें। मुद्राएं लेकर प्रधानमंत्री बारी-बारी सभी सामन्तों के द्वार पर पहुंचे और सबसे राजा के लिए हृदय का दो तोला मांस मांगा, लेकिन कोई भी राजी न हुआ। सबने अपने बचाव के लिए प्रधानमंत्री को एक लाख, दो लाख और किसी ने पांच लाख स्वर्ण मुद्राएं दे दीं। इस प्रकार एक करोड़ से ऊपर स्वर्ण मुद्राओं का संग्रह कर प्रधानमंत्री ने समय पर राजा के समक्ष एक करोड़ स्वर्ण मुद्राएं रख दीं। श्रेणिक ने पूछा, 'ये मुद्राएं किसलिए हैं?' प्रधानमंत्री ने सारा हाल कह सुनाया और बोले, 'दो तोला मांस खरीदने के लिए इतनी धनराशी इकट्ठी हो गई किन्तु दो तोला मांस नहीं मिला। अपनी जान बचाने के लिए सामन्तों ने ये मुद्राएं दी हैं। अब आप सोच सकते हैं कि मांस कितना सस्ता है।' जीवन का मूल्य अनन्त है। हम यह न भूलें कि जिस तरह हमें अपनी जान प्यारी होती हैए उसी तरह सभी जीवों को अपनी जान प्यारी होती है।

(फेसबुक से प्रस्तुति : **अमनदीप आर्य**)

thearyasamaj.org

स्तुति प्रार्थना उपासना क्यों और कैसे?

आज मनुष्य भौतिक साधनों से सम्पन्न होते हुए भी अशान्त, दु:खी, तनाव ग्रस्त एवं चिन्तित दिखाई देता है क्योंकि वह आध्यात्मिकता को भूल गया। यदि हम इहलोक और परलोक दोनों को सुखी देखना चाहते हैं तो ईश्वरोपासना करें।

❒ अध्यापक देवराज आर्य, रोहतक मार्ग जींद-१२६१०२

ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते।
विते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षत:।। साम० ३६९

पदार्थ :- (ऋचं साम यजामहे) परमात्मा की स्तुति और उपासना का हम सेवन करें (याभ्यां कर्माणि कृण्वते) जिनके सेवन के साथ श्रेष्ठकर्म करते हैं (ते) वे दोनों (सदसि) हमारे हृदय सदन में (विराजत:) विशेष रूप से बने रहें (यज्ञं देवेषु वक्षत:) हमारे अध्यात्म यज्ञ को हमारी समस्त इन्द्रियों में प्रवाहित करें।

भावार्थ:- समस्त श्रेष्ठ कर्मों को परमात्मा की स्तुति उपासना से आरम्भ करना चाहिए, हमारे हृदय में स्तुति उपासना घर कर जावें और हमारी इन्द्रियों में अध्यात्म का सञ्चार कर दें जिससे हमारी इन्द्रियाँ असंयम का कार्य न कर सकें।

ईश्वर की स्तुति उपासना करने से ईश्वर के गुण उपासक में प्रविष्ट हो उसे कुमार्ग पर जाने से सचेत करते हैं। हमारी इन्द्रियाँ विषयों में फंस कर कुमार्ग में गति करने से रुक जाती हैं और हम अध:पतन से बच जाते हैं। मानव जब उस सर्वज्ञ परमात्म देव की विशेष स्तुति- ध्यानोपासना करता है तो उसके अन्दर परमात्मा प्रकाशित होकर अज्ञान, अविद्या तथा अयज्ञीय भावों को दूर कर देता है। जिससे हम पाप कर्म करने से बच जाते हैं। पाप कर्म से बचना ही सुख की राह में कदम बढ़ाना है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती 'संस्कार विधि' में लिखते हैं कि- प्रत्येक यज्ञ, संस्कार, वैदिक-अनुष्ठान, मांगलिक अवसर के आरम्भ में इन मन्त्रों का श्रद्धा और भक्ति से अर्थसहित पाठ करें और इनके द्वारा ईश्वर की स्तुति- प्रार्थना-उपासना स्थिरचित्त होकर करें।

स्तुति क्या है?

परमेश्वर के गुणों और उपकारों का, उसके नामों और दिव्य कर्मों का स्मरण- ध्यान करना 'स्तुति' है। इससे गुणगान करने वाले में उस परमेश्वर के गुणों का आधान हो जाता है, प्रीति बढ़ती है।

प्रार्थना क्या है?

सब उत्तम कामों में ईश्वर की सहायता की कामना करना 'प्रार्थना' है परन्तु यह अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त करनी उत्तम है। इससे अभिमान का नाश, आत्मा में आर्द्रता तथा गुण-ग्रहण में रूचि बढ़ती है।

उपासना क्या है?

ईश्वर के ध्यान में और स्वरूप में अपनी आत्मा को मग्न करना उपासना है। ईश्वर के सर्वव्यापी, दयालु, न्यायकारी तथा सर्वान्तर्यामी रूप का ध्यान करना, उसके समीप बैठना ईश्वर की उपासना है।

ईश्वर उपासना क्यों?

अधिकांश नर-नारी संसार में जन्म लेकर अपनी आत्मा और उसके स्वामी परमात्मा को प्रकृति की चकाचौंध में भूल जाते हैं। आज मनुष्य भौतिक साधनों से सम्पन्न होते हुए भी अशान्त, दु:खी, तनाव ग्रस्त एवं चिन्तित दिखाई देता है क्योंकि वह आध्यात्मिकता को भूल गया। यदि हम इहलोक और परलोक दोनों को सुखी देखना चाहते हैं तो ईश्वरोपासना करें। किसलिए?

१ सद्बुद्धि एवं मन की शुद्धि के लिए-

हम जो भी कार्य करते हैं वे सभी मन से

thearyasamaj.org

विचार करके तथा बुद्धि से निर्णय करके करते हैं। परन्तु अज्ञान, स्वार्थ, मोह और लोभ के कारण अथवा विषयों के वशीभूत होकर हम अनेक बार अनुचित कार्य कर बैठते हैं जिसके परिणाम दु:ख रूप में हमें भोगने पड़ते है। मन और बुद्धि जब दोनों रोगी हो जाते हैं तो मनुष्य दुष्कर्मी हो जाता है। हम सब जानते हैं कि दुष्कर्मों का फल पाप होता है तथा पाप का फल 'दु:ख' जब मिलता है तो वह परमात्मा याद आ जाता है। मन रूपी पात्र को शुद्ध करने एवं बुद्धि को निर्मल बनाने का एकमात्र उपाय प्रात: सायं ईश्वर की उपासना है। जब हमारा मन और बुद्धि दोनों पवित्र हो जाते हैं तो हम पवित्र कार्य करने लग जाते हैं। पवित्र और श्रेष्ठ कार्यों का फल सदैव अच्छा ही होता है इसलिए मन की शुद्धि एवं बुद्धि को मेधावी बनाने के लिए ईश्वर की उपासना करनी चाहिए।

२ उपासना आत्मा का भोजन है–

जिस प्रकार अन्न, फल, दूध आदि शरीर का भोजन है, उसी प्रकार उपासना आत्मा का भोजन है। जब हम कर्त्तव्य पारायण हो पवित्र मन और शुद्धि बुद्धि द्वारा उपासना में लीन होते हैं तो मोह, लोभ, क्रोध एवं काम आदि आन्तरिक शत्रुओं का मन पर धीरे धीरे प्रभाव घटता चला जाता है और हम अपने जीवन के लक्ष्य मोक्ष की ओर अग्रसर होते चले जाते हैं। आत्मा का अन्तिम और परम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति ही है।

३ सत्यासत्य अथवा धर्म–अधर्म को जानने के लिए–

ईश्वरोपासना द्वारा बुद्धि निर्मल एवं सात्विक होकर सत्य, धर्म, न्याय तथा परोपकार के कार्यों में मन और इन्द्रियों को लगाती है जिससे हमारा लोक परलोक दोनों ही सुधर जाते हैं।

४ सद्बुद्धि अर्थात मेधा बुद्धि की प्राप्ति हेतु–

संसार के समस्त प्राणियों में मनुष्य सबसे उत्तम कहा जाता है क्योंकि इसमें बुद्धि एवं ज्ञान का बाहुल्य है। मनुष्य के अन्दर जब तक श्रेष्ठ सात्विक बुद्धि है, तब तक वह धर्म, परोपकार तथा समाज, राष्ट्र हितकारी कार्यों को अपना निज कर्त्तव्य समझता है। जीव मात्र की सेवा करना तथा पितरों की आज्ञा पालन करना, विद्वानों के मार्ग पर चलना ही उसका परम ध्येय है। ये सभी श्रेष्ठ कर्म सद्बुद्धि द्वारा सम्पन्न होते हैं।

संसार के समस्त सुखों का मूल सद्बुद्धि है। गायत्री महामन्त्र में – 'धियो यो न: प्रचोदयात्' उच्चारण कर परमेश्वर से सद्बुद्धि की ही याचना करते हैं। यह सद्बुद्धि प्राप्त होती है ईश्वर की भक्ति एवं उपासना करने से। इसलिए हमें ईश्वर की स्तुति उपासना अवश्य करनी चाहिए।

५ ईश्वर की महान कृपा का धन्यवाद देने हेतु–

उस परमात्मा की अपार कृपा से ही हमें यह दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त हुआ है। वही हमारा पालन पोषण करने हेतु अनेक प्रकार के अन्न, फल, दूध मेवा, मिष्ठान, जल आदि उत्तम पदार्थ प्रदान करता है। वही सब सुखों का दाता बल, बुद्धि, ज्ञान देकर श्रेष्ठ कर्म करने का विशाल क्षेत्र हमारे लिए प्रदान करता है। उसकी इस दयालुता के लिए हमें प्रतिदिन प्रात: सायं उसका धन्यवाद अवश्य करना चाहिए। हम इस महान उपकार के लिए जब कृतज्ञ होकर उस ईश्वर का स्मरण, चिन्तन एवं उपासना करते हैं तो यही उस ईश्वर की कृपा का धन्यवाद है।

कैसे करें उसकी उपासना?

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।। यजु०३०–३

हे सकलजगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर। आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दु:खों, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को हमसे दूर कीजिए और जो कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वे सब हमको प्राप्त कीजिए।

उक्त मन्त्र में परमेश्वर से दु:खों, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों को हमसे दूर रखने की बात कही गई है क्योंकि इन बुराईयों के कारण ही पाप वृत्तियाँ बढ़ कर मनुष्य पाप के काम करने लग जाता है जिसके परिणाम स्वरूप उसे दु:ख अवश्य भोगना पड़ता है।

ये दुर्गुण और दुर्व्यसन तथा बुराईयाँ न चाहते हुए भी मनुष्य के अन्दर कैसे प्रवेश कर जाती हैं? इनके प्रवेश करने का कारण काम, मोह और लोभ है। जब हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ किसी भी वस्तु को देखती या उसका ध्यान करती हैं, तो उसकी प्राप्ति की कामना हमारे मन में पैदा हो जाती है, उसके प्रति हमारा मोह हो जाता है। मोह अधिक बढ़ने से लोभ मर्यादा लांघ जाता है। ज्ञानेन्द्रियाँ इस दशा में अनियंत्रित हो जाती हैं। ऐसी अवस्था में मन चंचल हो उठता है तथा बुद्धि विवेकशील नहीं रहती। जब बुद्धि ठीक निर्णय नहीं कर पाती तो मनुष्य अनेक बुराईयों का शिकार हो पतन के गहरे गड्ढे में गिरकर अनेकविध दु:ख पाता है।

जब हम प्रभु से दुरितों को दूर करने के लिए प्रार्थना करते हैं तो इसके लिए हमें भी पूर्ण पुरुषार्थ से दुरितों से दूर रहकर उसके स्थान में यज्ञ, दान, तप, सत्य, दया, संयम तथा साधना आदि ज्ञान बीज के अंकुर पैदा करने होंगे।

आओ हम असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय के मार्ग पर अग्रसर होकर सुखी जीवन जीने की कला को धारण करते चलें।

thearyasamaj.org

देवी

स्वामी श्रद्धानन्द (लाला मुंशीराम) के जीवन की रोमांचक सत्यकथा

इस समय मुझे ठीक संस्कृत कवि की कल्पना के अनुसार दृश्य जंचा और मैंने जान लिया कि पतिव्रता देवी पति की स्वास्थ्य रक्षा के समय माता, विपत्ति के समय भगिनी और उसे संतान सुख पहुँचाने के लिए धर्मपत्नी का रूप धारण करती है।

पिता जी को उन घटनाओं का ज्ञान न था जिन्होंने मुझे नाच तमाशों से घृणा दिलाई और मद्यपान की आदत कुछ काल के लिये छुड़वा दी। उन्हें यह परिवर्तन पण्डित दयानन्द सरस्वती के सत्संग का फल दीख पड़ा, इसलिए यद्यपि वे हरिहर के निन्दक संन्यासी की बात स्वयं सुनना पाप समझते थे, तथापि पुत्र के काया पलट के लिए धन्यवाद देते थे। मुझे आज्ञा हुई कि स्वदेश जाकर अपनी धर्मपत्नी को विदा करा लाऊँ।

मैं घर पहुँचा। जालंधर जाकर सम्बन्धियों से मिला और तीसरी बार अपनी धर्मपत्नी को, बिना मुंह देखे विदा करा लाया। तलवन पहुंचकर अपनी अर्धांगिनी से पहली बातचीत हुई। पुराने नावलों के हवाई किले रुखसत हुए, परन्तु एक नया भाव उत्पन्न हुआ। वह यह कि जिस अबला को अपना आश्रय मिला है, उसे गुणवती बनाने के लिए शिक्षा दूँ। उस समय मेरे मन में दया और रक्षा का भाव ही प्रबल था।

बरेली आने पर शिवदेवी (मेरी धर्मपत्नी) का यह नियम हुआ कि दिन का भोजन तो मेरे पीछे करती ही, परन्तु रात को जब मुझे देर हो जाती और पिता जी भोजन कर चुकते तो मेरा और अपना भोजन ऊपर मंगा लेती और जब मैं लौटता, उसी समय अंगीठी पर गरम करके भोजन कराती, पीछे स्वयं खाती। एक रात मैं रात के आठ बजे मकान लौट रहा था। गाड़ी दर्जी चौक के दरवाजे पर छोड़ी। दरवाजे पर ही बरेली के बुजुर्ग रईस मुन्शी जीवनसहाय का मकान था। उनके बड़े पुत्र मुन्शी त्रिवेणी सहाय ने मुझे रोक लिया। गजक सामने रक्खी और जाम भरकर दिया। मैने इन्कार किया। बोले-'तुम्हारे लिए ही तो आतशा खिंचवाई है। यह जोहर है।' त्रिवेणी सहाय जी के छोटे सब मेरे मित्र थे, उनको मैं बड़े भाई के तुल्य समझता था। न तो आतशा का मतलब समझा न जोहर का, एक गिलास पी गया। फिर गप्पबाजी शुरू हो गई और उनके मना करते करते मैं चार गिलास चढ़ा गया।

असल में वह नशीली शराब थी। उठते ही असर मालूम हुआ। दो मित्र साथ हुए। एक ने कहा चलो मुजरा करायें। उस समय तक न तो मैं कभी वेश्या के मकान पर गया था और न कभी वेश्या को अपने यहाँ बुलाकर बातचीत की थी, केवल महफिलों में नाच देखकर चला आता था। शराब ने इतना जोर किया कि पांव जमीन पर नहीं पड़ता था, एक खूंड मेरे हाथ में था। एक वेश्या के घर जा घुसे। कोतवाल साहब के पुत्र को देखकर सब सलाम करके खड़ी हो गई, घर की बड़ी नाइका को हुक्म हुआ कि मुजरा सजाया जाय। उसकी नौची के पास कोई रूपया देने वाला बैठा था, उसके आने में देरी हो गई, न जाने मेरे मुंह से क्या निकला, सारा घर कांपने लगा। नोची घबराई हुई दौड़ी आई और सलाम किया।

तब मुझे किसी अन्य विचार ने आ घेरा। उसने क्षमा मांगने के लिए हाथ बढ़ाया और मैं नापाक-नापाक कहते हुए नीचे उतर आया। यह सब पीछे साथियों ने बतलाया। नीचे उतरते ही घर की ओर लौटा। बैठक में तकिये पर गिरा और बूट आगे कर दिये जो नौकर ने उतारे। उठ कर ऊपर जाना चाहा, परन्तु खड़ा नहीं हो सकता था। पुराने भृत्य बूढ़े पहाड़ी पाचक ने सहारा देकर ऊपर चढ़ाया। छत पर पहुंचते ही पुराने अभ्यास के अनुसार किवाड़ बंद कर लिए और बरामदे के पास पहुंचा ही था कि उलटी होने लगी। उसी समय एक नाजुक छोटी उंगलियों वाला हाथ सिर पर पहुंच गया और मैंने उलटी खुल के की।

अब शिवदेवी के हाथ में मैं बालकवत् था। कुल्ला करा, मेरा मुंह पोंछ कर, ऊपर अंगरखा जो खराब हो गया था, बैठे-बैठे ही फेंक दिया और मुझे आश्रय देकर अन्दर ले गई। वहाँ पलंग पर लेटाकर मुझ पर चादर डाल दी और साथ बैठकर माथा और सिर दबाने लगी। मुझे उस समय

thearyasamaj.org

वैदिक आदर्श से गिरकर भी जो सतीत्व धर्म का पालन पौराणिक समय में आर्य महिलाओं ने किया है, उसी के प्रताप से भारत भूमि रसातल को नहीं पहुँची और उसमें पुनरुत्थान की शक्ति अब तक विद्यमान है– यह मेरा निज का अनुभव है। भारत माता का ही नहीं, उसके द्वारा तहजीब 'सिविलिजेशन' की ठेकेदार संसार की जातियों का सच्चा उद्धार भी उसी समय होगा जब आर्यावर्त्त की पुरानी संस्कृति जागने पर देवियों को उनके उच्चासन पर फिर से बैठाया जाएगा।

का करुणा और शुद्ध प्रेम से भरा मुख कभी नहीं भूलेगा। मैंने अनुभव किया– मानो मातृशक्ति की छत्रछाया के नीचे निश्चिन्त लेट गया हूँ। पथराई हुई आंखें बंद हो गई और मैं गहरी नींद सो गया।

रात को शायद एक बजा था जब मेरी आंखें खुलीं। वह चौदह–पन्द्रह वर्ष की बालिका पैर दबा रही थी। मैंने पानी मांगा। आश्रय देकर उठाने लगी, परन्तु मैं उठ खड़ा हुआ। गरमा–गरम दूध अंगीठी से उतारा और उसमें मिश्री डालकर मेरे मुँह को लगा दिया। दूध पीने पर होश आया। उस समय अंग्रेजी उपन्यास मगज में से निकल गए और गुसाईं जी के खींचे दृश्य सामने आ खड़े हुए। मैंने उठकर और पास बिठाकर कहा– देवी! तुम बराबर जागती रही और भोजन तक नहीं किया। अब भोजन करो। उत्तर ने मुझे व्याकुल कर दिया। परन्तु उस व्याकुलता में भी आशा की झलक थी। शिवदेवी ने कहा– 'आप के भोजन किए बिना मैं कैसे खाती! अब भोजन करने में क्या रूचि?'

उस समय की दशा का वर्णन लेखनी द्वारा नहीं हो सकता। मैंने अपनी गिरावट की दोनों कहानियाँ सुनाकर देवी से क्षमा की प्रार्थना की, परन्तु वहाँ उनकी माता का उपदेश काम कर रहा था। 'आप मेरे स्वामी हो, यह सब कुछ सुना कर मुझ पर पाप क्यों चढ़ाते हो? मुझे तो यह शिक्षा मिली है कि नित्य आप की सेवा करूँ। उस रात बिना भोजन किए दोनों सो गए और दूसरे दिन से मेरे लिए जीवन ही बदल गया।

वैदिक आदर्श से गिरकर भी जो सतीत्व धर्म का पालन पौराणिक समय में आर्य महिलाओं ने किया है, उसी के प्रताप से भारत भूमि रसातल को नहीं पहुँची और उसमें पुनरुत्थान की शक्ति अब तक विद्यमान है– यह मेरा निज का अनुभव है। भारत माता का ही नहीं, उसके द्वारा तहजीब 'सिविलिजेशन' की ठेकेदार संसार की जातियों का सच्चा उद्धार भी उसी समय होगा जब आर्यावर्त्त की पुरानी संस्कृति जागने पर देवियों को उनके उच्चासन पर फिर से बैठाया जाएगा।

स्त्री औदार्य का एक और दृष्टान्त देकर अपनी संसार की यात्रा को आगे ले चलूँगा। छावनी के पारसी मद्य–विक्रयी का बिल बढ़ता ही जा रहा था। दूसरे ही दिन उसका लगभग तीन सौ का बिल आ पहुँचा। उस दिन उसे तीन–चार दिन की छुट्टी लेकर टाल दिया। मुझे चिन्ता तो थी ही, शिवदेवी जी ने भोजन कराते समय मेरी चिन्ता का कारण पूछा। अब तो कोई बात आपस में गुप्त रह नहीं सकती थी। वेद के उपदेशानुसार मानो मेरा विवाह पिछली रात ही हुआ था। मैंने सब कुछ स्पष्ट कह दिया। देवी ने कुल्ला करवा के हाथ मुंह धुलवाए और अपना ाोजन पाने के पहले ही अपने हाथ के सोने के कड़े उतार दिए। मैं चकित रह गया– 'देवी, यह कैसे हो सकता है? तुम्हें आभूषित करने के स्थान पर मैं तुम्हें आभूषणों से रहित करने का पाप कैसे लूँ?

इस समय मुझे ठीक संस्कृत कवि की कल्पना के अनुसार दृश्य जंचा और मैंने जान लिया कि पतिव्रता देवी पति की स्वास्थ्य रक्षा के समय माता, विपत्ति के समय भगिनी और उसे संतान सुख पहुँचाने के लिए धर्मपत्नी का रूप धारण करती है। देवी ने दूसरी जोड़ी दिखाकर कहा– 'एक जोड़ी पिता ने और दूसरी श्वसुर महोदय ने दी थी। एक जोड़ी व्यर्थ पड़ी है। यह मेरा माल है। जब तन भी आपका है तो इसके लेने में क्या संकोच है! आपकी चिन्ता दूर करने का यह महंगा सौदा नहीं।' शब्द पंजाबी के थे और उसके अनुवाद में कुछ मुझ से बढ़ाया भी गया होगा।

प्रलोभन से बचने के लिए शेष रुपये देवी जी की सन्दूकची में रख दिये और मन में पक्का निश्चय कर लिया कि जब कमाने लग जाऊँ तो व्यय किए हुए धन को फिर से आभूषणों में मिला दूंगा। *(स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' से उद्धृत)*

thearyasamaj.org

मधुमेह का सफल ईलाज

❑योगाचार्य सूर्यदेव आर्य
निकट महादेव पैट्रोल पम्प, उधमसिंह मार्ग, कृष्णा कालोनी, जींद-१२६१०२
मो० 94166 15536, 94167 15537

मधुमेह (शुगर) एक रोग नहीं, अपितु पाचन संस्थान के रोगों का समूह कहा जा सकता है। यह रोग भयंकर गति से बढ़ता जा रहा है। केवल दिल्ली शहर में प्रतिवर्ष लगभग ४००० बच्चे इसके शिकार हो जाते हैं। डब्ल्यू० एच० ओ० की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष २०२५ तक भारत में मधुमेह के रोगियों की संख्या लगभग ६ करोड़ हो जाएगी। इस रोग की गणना उन रोगों में की जाती है, जिनसे आधुनिक युग में बहुत बड़ी संख्या में लोग पीड़ित हैं। आज इस रोग के विषय में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। इसी भावना से प्रेरित होकर हजारों रोगियों का सफल उपचार करने के बाद विशेष अनुभव के आधार पर लिखने का प्रयास किया है। यह रोग शारीरिक श्रम व व्यायाम न करने वालों को अधिक होता है।

कारणः

पारिवारिक देन-माता पिता के इस रोग से ग्रस्त होने से संतान को रोग हो जाता है।

-अत्यधिक मोटापा

-शारीरिक श्रम का अभाव अर्थात् व्यायाम, योगाभ्यास व शारीरिक कार्य न करना, आलसी होना।

-असंयमित दिनचर्या।

-मानसिक तनाव, घबराहट, अधिक मीठा, मिठाईयाँ व मीठे फल, चाय आदि का अधिक सेवन करना।

-चीनी, चावल, आलू का अधिक सेवन करना।

उपर्युक्त कारणों से कब्ज, गैस आदि रोग बनकर आमाशय, यकृत और अग्न्याशय दुर्बल हो जाते हैं। दुर्बल यकृत शर्करा से बनने वाली ग्लायकोजीन की मात्रा को संभाल कर रखने में असमर्थ हो जाता है। अग्न्याशय से स्रवित रस इन्सुलिन हारमोन सीधा रक्त में मिलकर शर्करा का ज्वलन करके उसे ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है। अग्न्याशय के अस्वस्थ होने पर इन्सुलिन का स्राव अल्प मात्रा में हो जाने के कारण रक्त में स्थित शर्करा का अपचय पूर्णरूपेण नहीं हो पाता, अग्न्याशय के अतिरिक्त आड्रेनल ग्रंथियाँ, पिट्यूटरी ग्रंथि, थायराइड ग्रंथि तथा जिगर द्वारा अपना कार्य भली-भाँति न करने से यह रोग बढ़ जाता है, जिसके कारण गुर्दे बढ़ी हुई शर्करा को छानकर मूत्र मार्ग द्वारा बाहर निकाल देते हैं, जिसे मूत्र शुगर कहते हैं।

लक्षणः

मुख का स्वाद मीठा रहना, अत्यधिक प्यास लगना, गले का सूखना, अंगों में जलन, भारीपन, हमेशा आलस्य रहना, त्वचा का शुष्क रहना, मधु जैसा मूत्र आना, मूत्र त्याग की जगह चींटियाँ आना, बार-बार पेशाब आना, घाव का जल्दी ठीक न होना, शारीरिक शक्ति का धीरे-धीरे कम होना, पैदल चलने में कष्ट होना।

आधुनिक मैडिकल साईंस में शरीर की प्रत्येक कार्य प्रणाली को चैक करने व मापने की अनेक विधियाँ हैं जिसकी रक्तचाप व शुगर मापन प्रणाली में ८० से १२० मि०ग्रा० प्रतिशत की स्थिति सामान्य मानी गई है।

अग्रेंजी दवाईयाँ-

रोगियों का सर्वेक्षण करने व अनेक योग शिविरों के दौरान अधिकतर रोगियों ने स्वीकार किया कि ऐलोपेथी में इस रोग का कोई स्थाई ईलाज नहीं है। बस इतना है कि सारा जीवन टेबलेट खाते रहो। रोगियों ने यह भी बतलाया कि जब तक दवाई लेते रहते हैं, कुछ आराम रहता है, जब छोड़ देते हैं दोबारा रोग आक्रमण कर देता है। इससे सिद्ध होता है कि यह सही ईलाज नहीं है। वर्षों के अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि बस उपर्युक्त मूल कारणों को, मूल भूलों को दूर कर दो, रोग ठीक हो जाएगा। प्राकृतिक चिकित्सा व योग साधना के बिना इस रोग को दूर करना असंभव है।

उपचारः भोजन परिवर्तन

इन्हें छोड़ दें : मिठाईयाँ, चीनी, चावल, आलू, मीठे फल, खजूर, किसमिस, चाय, मुनक्का, तले भुने जले पदार्थ, समोसा, पकौड़ा, कोल्ड-ड्रिंक्स, फास्टफूड, धूम्रपान, शराब, वनस्पति घी, आम, चीकू, शहद।

ये पदार्थ खाएँ : दही, हरी सब्जियाँ, चौलाई, बथुआ, धनिया, पुदीना, गोभी, खीरा, ककड़ी, लौकी, नारियल, जामुन, करेला, मूली, टमाटर, नींबू, गाजर, प्याज, अदरख, लस्सी, भीगे बादाम (गिरी)

सफल ईलाज के लिए भोजन- तालिका

प्रात: ६ बजे- (रात को २५० ग्राम पानी में ६ ग्राम मेथी दाना थोड़ा कूटकर भिगो दें।) इस मेथी दाना के पानी में एक नींबू रस मिलाकर पीएँ।

८ बजे- आधा कप करेले व आधा कप खीरे का रस लें।

९ बजे- अंकुरित मूंग, मोठ, मसूर, चना या मटर के साथ अनारदाना, पालक धनिया के पत्ते मिलाकर नाश्ता करें।

दोपहर: १२-१ बजे-सलाद, मेशी रोटी या चोकर वाली रोटी, उबली हुई हरी सब्जियाँ लें।

३ बजे- जामुन गुठली का चूर्ण व एक गिलास लस्सी लें।

५ बजे-पपीता, काला जामुन, नारंगी, टमाटर, आंवला, अनानास, ककड़ी, अमरूद, नाशपाती, लस्सी सुविधा व क्षमता के अनुसार लें।

रात्रि: ८ बजे- अंकुरित अन्न, सब्जियाँ (करेले की सब्जी), मेशी रोटी लें।

आयुर्वैदिक उपचार-

दिव्य मधुनाशिनी वटी, वसन्त कुसुमाकर रस या योगेन्द्र रस; किसी एक की एक एक वटी प्रात: सायं लें।

सफल आयुर्वैदिक योग

(आरोग्यामृत): नीम की सूखी पत्तियाँ-४०० ग्राम, गिलोय -२०० ग्राम, सौंफ-२०० ग्राम, अजवायन-२०० ग्राम, गोरख मुण्डी-२०० ग्राम, लाल चन्दन-२०० ग्राम। इनको लेकर चूर्ण बना लें। हर रोज १० दिन लगातार वमन क्रिया (पानी पीकर बाहर निकालना) करके एक चम्मच चूर्ण को एक गिलास पानी में उबालकर पीएँ। शाम को एक चम्मच गर्म पानी से लें। १० दिन बाद बिना वमन किए लगातार प्रात: सायं गर्म पानी में उबालकर छानकर लें। यह औषधि हमारे द्वारा अनुभूत है। शुगर को जड़ से खत्म करती है और रक्त विकार, भूख न लगना, कब्ज होना, आंतों में मल जमना, मोटापा होना, कॉलेस्ट्रॉल बढ़ना, तेजाब होना आदि अनेक रोगों को भी ठीक करती है। इसलिए इसका नाम आरोग्यामृत रखा गया है। इसी नाम से हमारे चिकित्सालय में भी उपलब्ध है। इसे प्रयोग करने से पहले सलाह ले सकते हैं।

प्राकृतिक उपचार-

प्रातःकाल धूप में १५-२० मिनट मालिश, पेट-पीठ मालिश, गीली चद्दर लपेट, एनिमा, मिट्टी पट्टी, गर्म ठण्डा सेंक, रात को गर्म पाद-स्नान, फलाहार, रसाहार, सात्विक प्राकृतिक आहार, प्राकृतिक दिनचर्या।

यौगिक चिकित्सा-

योगासन : हलासन, नौकासन, उत्तानपादासन, सर्वांगासन, मत्स्यासन, भुजंगासन, धनुरासन, पश्चिमोत्तानासन, वक्रासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन, मयूरासन, शवासन, शलभासन।

प्राणायाम : कपालभाति, अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका, बाह्य कुम्भक, ओंकार नाद, मूलबन्ध, उड्डियान बन्ध, सीत्कारी, शीतली, सूर्यभेदी।

यह लेख मैंने अपने अनुभव के आधार पर जनहित की भावना से लिखा है। अगर कोई भी रोगी इसका लाभ उठाता है तो मैं अपना प्रयास सफल समझूंगा। परन्तु प्राकृतिक उपचार, यौगिक चिकित्सा किसी योग्य शिक्षक व चिकित्सक के निर्देश में ही करें, क्योंकि पूरा विवरण लेख में देना संभव नहीं है। इसके लिए हमारे केन्द्र द्वारा चलाए जा रहे योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविरों में प्रशिक्षण लें, अपने शहर, स्थान पर शिविरों का आयोजन करवाएँ। लम्बे अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि अगर कोई ऊपर वर्णित उपचार को पूरी लगन, निष्ठा व विवेक से करेगा तो जरूर इस रोग से मुक्त होगा।

गरम पानी

- पानी को थोड़ा गर्म करके पी लें तो कब्ज को दूर करने में मदद मिलती है।
- गर्म पानी से स्नान थकान मिटाने, त्वचा को निखारने और इसकी बीमारियों को दूर करने का सबसे अच्छा साधन है।
- गुनगुने पानी को मुंह में घुमा-घुमा कर घूंट घूंट करके पीने से मोटापा नियंत्रित होता है।
- गुनगुना पानी शरीर में मौजूद गंदगी को साफकरने की प्रक्रिया तेज करता है।
- शारीरिक श्रम करने के पहले थोड़ा गुनगुना पानी पी लें, थकान कम महसूस होगी, हल्का महसूस करेंगे।
- गर्म पानी के साथ नींबू और शहद का मिश्रण बनाकर सेवन करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है और वजन कम करने में भी ये नुस्खा लाभदायक है।
- ठंडे पानी को जहाँ गुर्दों के लिए हानिकारक माना जाता है वही गुर्दों की सेहत अच्छी बनाए रखने के लिए दिन में कम से कम दो बार यानी सुबह-शाम गुनगुना पानी पीना चाहिए। इससे शरीर में गंदगी का जमाव नहीं हो पाता।
- सौंदर्य और स्वास्थ्य, दोनों की दृष्टि से गर्म पानी अचूक दवा है। इस पानी में थोड़ा सा गुलाब जल मिलाकर धीमे-धीमे शरीर पर डालने से आराम का अहसास होता है और हर प्रकार का दर्द चुटकियों में दूर हो जाता है।

thearyasamaj.org

भजनावली

❑स्व० पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक

अपने आप को भूल गया।

दुनिया के मेले में आकर अपने आप को भूल गया।
क्या करना था क्या नहीं करना पुण्य पाप को भूल गया।।
कहाँ से आया कहाँ जाएगा बैठ के नहीं विचार किया।
बलशाली से डरता रहा और निर्बल पर प्रहार किया।
छिद्रान्वेषी बना रहा कभी अपना नहीं सुधार किया।
निन्दा चुगली करी हमेशा पैसा ही आधार किया।।
कौन हूँ मैं और क्यों आया इस वार्त्तालाप को भूल गया।।१।।
हुई सगाई जब तेरी सत्संग में आना छोड़ दिया।
पत्नी आई मात पिता की सेवा ठाना छोड़ दिया।।
बच्चे पैदा होते ही तैने पीना खाना छोड़ दिया।
नशे विषय के चक्कर में ईश्वर गुण गाना छोड़ दिया।।
पैदा होते समय किया था उस आलाप को भूल गया।।२।।
बचपन तो गया खेल कूद में मस्त जवानी आई थी।
जिस ने तुझको दई सम्पदा उसकी याद भुलाई थी।।
धर्म कर्म और लाज शर्म की चादर तार बगाई थी।
विषयों में फँसकर के तूने सारी उम्र गंवाई थी।।
मोह ममता के फँसा जाल में निज माँ बाप को भूल गया।।३।।
दोनों समय बैठकर तूने कभी भी ध्यान लगाया ना।
यम नियमों का किया ना पालन प्राणायाम चढ़ाया ना।।
चित्त की वृत्ति खुली छोड़ दी मन पर काबू पाया ना।
मनसा वाचा कर्मणा का पाठ कभी अपनाया ना।।
चन्द्रभान अभ्यास बिना अब ओ३म् जाप को भूल गया।।४।।

लाखों आए चले गए

लाखों आए चले गए इस आवागमन के चक्कर में।
कल्प और महाकल्प बीत गए जन्म मरण के चक्कर में।।
कितनी बार यहाँ जन्म लिया तूने किस-२ के घर याद नहीं।
कितनी बार हम बने चौपाए दोपाए पर याद नहीं।
कितनी बार आकाश में चढ़कर टोहया सरोवर याद नहीं।
कितनी बार हम नारी बन गए कितनी बार नर याद नहीं।।
कितनी बार मरे बिन आई माया धन के चक्कर में।।१।।
कितनी बार यहाँ साधु बन गए पढ़ लिखकर योगी हो गए।
कितनी बार गृहस्थी होके दुनिया में भोगी हो गए।।
अधिक भोग के कारण ही हम कई बार रोगी होगे।
जब मृत्यु ने आकर घेरे संबंधी सोगी होगे।।
कई बार दुश्मन बन बैठे चाल चलन के चक्कर में।।२।।
कई बार स्थावर बन गए हम जमीं के अन्दर गड़े रहे।
कई बार कृमि बन करके दुर्गन्धी में सड़े रहे।।
कई बार हम माँ के गर्भ में नौ महीने तक पड़े रहे।
शेर बघेरे चीते बनकर पहाड़ के ऊपर खड़े रहे।।
कहीं कोई मारा कहीं आप मरे पेट भरण के चक्कर में।।३।।
कई बार हमने सोचा मन को कर लेंगे वश में।
पर मन तो वश में हुआ नहीं हम ही फंस गए गर्दिश में।।
मन वच कर्म एक हुआ ना जहर भर गया नस नस में।
कहें भीष्म सब उम्र बीत गई देखो आज कसमकस में।।
चन्द्रभान लगा दी जिन्दगी सत्य वचन के चक्कर में।।४।।

भजन (नीति)

मूर्ख नौकर नार हठीली सांप वास जिस घर पै।
चौबीस घंटे मौत घूमती रहती है उस नर पै।।
मूर्ख नौकर काम करे ना बौलै तो उलटा बौलै।
कहता कुछ कर देता कुछ ये ऊँच नीच को ना तोलै।।
राजी बोल के कोई पूछ ले सारा भेद तुरंत खोले।
घर पावै ना दुकां पै बैठे आवारागर्दी मैं डोलै।
चौबीस घंटे भार बना रहता मालिक के सर पै।।१।।
उस मानस का क्या जीना है जिसकी नार हठीली।
दरवाजे पर पड़े हैं झूठे बरतन तवा पतीली।।
ऊँची नीची साड़ी बांधे कुर्ती गांठ गठीली।
पति आवे जब पड़े खाट पै तबीयत मेरी ढ़ीली।।
देखने लायक नजारा हो सै सजनो इस अवसर पै।।२।।
जिस घर मैं हो सांप का वासा पासा उल्टा पड़ ज्या।
बालक रोवें शोर मचावें धोरे को सांप लिकड़ ज्या।।
मौत के साये में जीते हैं पल में काम बिगड़ ज्या।
सारा कुनबा भयभीत रहे ना जाने कब लड़ज्या।।
सारे बच्चे सांप से डर के कट्ठे होज्यां बिस्तर पै।।३।।
साहूकार नै कंजूसी तज नौकर स्याणा चाहिए।
गुण और कर्म स्वभाव मिलाके विवाह कराना चाहिए।
घर में शत्रु आन घुसे तो उसे भगाना चाहिए।
कहें भीष्म जी गाओ तो लय सुर में गाना चाहिए।।
चन्द्रभान सफल होगा विश्वास करो ईश्वर पै।।४।।

thearyasamaj.org

बाल वाटिका

जानते हो?

❒हर्षित योगी

■गैंडे की सख्त चमड़ी पर साधारण गोली का असर नहीं होता है।

■च्युइंगम चबाते-चबाते प्याज काटने से आँखों से आँसू नहीं आते हैं।

■रूस मे मास्को एक ऐसा शहर है जिसके आधे हिस्से में रात तो आधे में दिन होता है।

■कोबरा नामक वृक्ष के पास इंसान के जाते ही उसकी डाल उसे जकड़ लेती हैं और तब तक नहीं छोड़ती जब तक वह प्राण न त्याग दे। यह दक्षिण अफ्रीका में पाया जाता है।

■मैंड्रीक नामक वृक्ष को काटने पर बच्चों के रोने की आवाज आती है।

■मध्य अफ्रीका में रेफिया नाम के वृक्ष की पत्तियाँ 82 फीट तक लम्बी होती हैं।

■कौओं के समूह को मर्डर कहा जाता है।

■मच्छरों के भी दांत होते हैं।

हास्यम्

❒प्रतीक मानव

●आसु- एक छोटी सी छतरी के नीचे सात आदमी खड़े थे। उनमें से कोई भी नहीं भीगा।
हर्षित- यह कैसे हो सकता है?
आसु- बारिश नहीं हो रही थी न!

●नत्थू- टिकट बाबू, एक ससुराल का टिकट दे दो।
बाबू- तुम्हारी ससुराल कहाँ है?
नत्थू- इतनी सी बात भी नहीं पता तो दुनिया जहान के टिकट कैसे बेच लेते हो?

●गोलू- अगर हाथी पेड़ पर चढ़ जाए तो क्या करेगा?
मोलू- पत्ते पर खड़ा होकर पतझड़ का इन्तजार करेगा।

●रोगी- डॉक्टर जी मेरी सहायता कीजिये, मुझे बातें करते समय केवल आवाज सुनाई देती है, सामने वाला आदमी दिखाई नहीं देता।
डॉक्टर- ऐसा कब होता है?
रोगी- जी, जब मैं फोन पर बात करता हूँ।

●एक शराबी रात को सड़क के किनारे एक बिजली के खंभे को खटखटा रहा था। पास से गुजरते हुए एक व्यक्ति को मजाक सूझा, कहा- आपके घर वाले सो गए लगते हैं! 'ऐसा कैसे हो सकता है?' शराबी बड़बड़ाया। 'कैसे सो जाएँगे, देखते नहीं, ऊपर के कमरे की बत्ती जल रही है।'

प्रहेलिका:

◆बिन धोये सब खाते हैं।
खाते ही पछताते हैं।।
बोलो ऐसी चीज है क्या,
कहते समय शरमाते हैं।।

◆खड़ा द्वार पर ऐसा घोड़ा!
जिसने चाहा पेट मरोड़ा।।

◆सुख दु:ख मैं साथी हूँ।
पग पग साथ निभाती हूँ।।
क्षण भर भी जुदा न होती,
बड़ी छोटी बन जाती हूँ।।

◆छोटे से मेरे मटकूदास,
कपड़े पहने सौ पचास।।

◆बूझो भैया एक पहेली,
जब काटो तब नई नवेली।

◆वह कौन है जो सांवले रंग का है,
शेर की तरह गरजता है और बेरोकटोक घूमता है?

◆दो बहनें आपस में साथ निभाएँ,
मिलना चाहें पर मिल न पाएँ।

धोखा, ताला, परछाई, प्याज, पेन्सिल, बादल, आँखें

विचार कणिका:

❒प्रतिभा

◆जीवन कर्म का ही नाम है जो कर्म नहीं करता उसका अस्तित्व तो है किन्तु वह जीवित नहीं होता। -हिलार्ड

◆कठिनाईयों में सिद्धान्तों की परीक्षा होती है।

◆फैसला जल्दी करो मगर बहुत सोचने के बाद-

◆विपत्तियों के बिना मनुष्य नहीं जान सकता कि वह ईमानदार है या नहीं।

◆आलस्य भी एक प्रकार की हिंसा है। -महात्मा गांधी

◆अपनी अज्ञानता का आभास हो जाना, ज्ञान का प्रथम सोपान है।

◆हर काम खुशी से करोगे तो कोई काम बोझ नहीं लगेगा।

◆व्यक्ति को ऐसे मित्र का परित्याग कर देना चाहिए, जो उसकी पीठ पीछे उसके कार्य को हानि पहुंचाता है, बुरा भला कहता है और सामने मीठी मीठी बातें करता है।

thearyasamaj.org

वीर-गाथा

रानी चेनम्मा

प्रताप नारायण मिश्र

रानी चेन्नमा का जन्म झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के जन्म से लगभग ५६ वर्ष पहले कर्नाटक में बेलगाम के उत्तर में एक छोटे से गांव केकती में १७७८ ई० में हुआ था।

कर्नाटक के मलनाड़ क्षेत्र में समुद्र तट पर केलदि नाम का राज्य था। एक दिन की बात है। पूजा-पाठ आदि से निवृत्त हो केलदि की रानी चेन्नमा दोपहर में गरीबों को दान दे रही थीं कि उनको चार साधु भगवावेश में उधर आते हुए दिखे। जब रानी दान देकर निश्चिन्त हो गयीं, दान लेने वाले चले गए, वे स्वयं ही रानी के समीप आए। तब तक भगवा वस्त्रधारियों के मुखिया ने आगे बढ़कर रानी के चरण छू लिए। यह देखकर रानी चौंक पड़ी। रानी ने आगन्तुकों से कहा-'आपने यह क्या किया? चरण वंदना तो मुझे करनी चाहिए। किन्तु आप सब मुझे ही प्रणाम कर रहे हैं।' दल का नेता बोला-'महारानी ! मैं महाराष्ट्र के वीर छत्रपति शिवाजी का पुत्र हूँ। मेरा नाम राजाराम है। कुछ विशेष कारणों से साधुवेश धारण कर रखा है। मुगलों की फौज मेरे पीछे पड़ी हुई है। उनको किसी प्रकार से चकमा देकर भाग निकला हूँ ताकि पिताजी द्वारा छोड़े गए हिन्दवी साम्राज्य के अधूरे कार्य को आगे बढ़ा सकूँ। मैंने बहुत राजाओं से चन्द दिनों के लिए शरण मांगी, किसी ने भी पनाह नहीं दी।'

'सचमुच क्या किसी भी हिन्दू राजा ने शरण नहीं दी?' रानी चेन्नम्मा ने पूछा।

राजाराम ने रानी से कहा-'माँ! मैं आपको संकट में नहीं डालना चाहता। उन दुष्टों से मैं स्वयं निपट लूँगा--बस-- जिंजी पहुँच जाऊं। थोड़ा विश्राम करना चाहता हूँ बस--कल प्रातः ही चला जाऊंगा।'

रानी कुछ सोचकर पुनः बोली-'मैं तुम्हें जिंजी तक सुरक्षित पहुँचाऊंगी, किन्तु जब तक मैं न कहूँ तुम अपने परिचय को गुप्त रखो। जहाँ तक औरंगजेब का प्रश्न है, मैं उससे नहीं डरती। आज नहीं तो कल उससे टक्कर तो होगी ही। हम तो तुम सबके अहसानमंद हैं कि तुमने उसको महाराष्ट्र में ही रोक रखा है--नहीं तो दक्षिण भी उसका आखेट बन चुका होता।'

यथासमय रानी चेन्नम्मा के दत्तकपुत्र बसप्पनायक की सुरक्षा में राजाराम जिंजी पहुँच गए।

रानी चेन्नम्मा ने भगवान का नाम लेकर राजाराम को शरण तो दी थी किन्तु वह जानती थीं कि औरंगजेब इसे कदापि सहन नहीं कर सकेगा। अतः उन्होंने युद्ध की तैयारियां भी प्रारम्भ कर दी थीं। राजाराम के केलदि में रहने का समाचार छिपा नहीं रहा। दिल्ली के बादशाह को गुप्तचरों द्वारा समाचार मिल ही गया। रानी का आकलन सही निकला।

मुगल सेना केलदि की सीमा तक जा पहुँची थी। रानी ने पहले ही युद्ध के रणव्यूह की रचना कर ली थी। वह मलनाड़ के क्षेत्र में औरंगजेब के पुत्र आजम की सेना को लाना चाहती थी। वही इलाका उनके लिए अनुकूल और मुगलों के लिए प्रतिकूल था। आजम की सेना मलनाड के इलाके में पहुँची और रानी चेन्नम्मा की सेना भूखे शेर के समान अपने शिकार पर टूट पड़ी। अचानक और अप्रत्याशित हमले से शहजादा आजम हक्का-बक्का सा रह गया।

शहजादा आजम जिसने अब तक कई राजाओं- महाराजाओं को हराया था, आज एक स्त्री के हाथों पराजित होता दिख रहा था। प्रतिकूल परिस्थिति को भांप औरंगजेब ने ठीक उसी समय उसे जिंजी की ओर कूच करने की आज्ञा दी। आजम को जैसे मुंहमांगा वरदान मिल गया था। वह केलदि से अपना पिंड छुड़ाना ही चाहता था। अतः उसने रानी चेन्नम्मा से संधि कर ली। औरंगजेब ने केलदि को स्वतंत्र राज्य की स्वीकृति प्रदान कर दी तथा रानी ने उसके बंदी बनाए गए सैन्य अधिकारियों और सैनिकों को मुक्त कर दिया।

केलदि की इस वीर रानी का नाम केवल कर्नाटक के इतिहास में ही नहीं, अपितु भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा है। (प्रताप नारायण मिश्र की पुस्तक 'कर्नाटक की कहानियाँ' से साभार)

thearyasamaj.org

प्रेरक प्रसंग

स्वर्ग और नरक

❑ प्रतिष्ठा आर्या

एक युवक किसी राजा की सेना में सैनिक था। वह अपने गाँव आया था। उसके गाँव के बाहर कुटिया में एक संत रहते थे। वह एक दिन उनके पास पहुँचा। उन्हें प्रणाम करके सामने पड़े आसन पर बैठ गया और कहने लगा- 'महात्मा जी स्वर्ग और नरक क्या होता है?'

संत ने उससे पूछा- 'तुम तलवार साथ में क्यों रखते हो?'

उसने उत्तर दिया, 'मैं सैनिक हूँ। तलवार तो सैनिक कस आभूषण होता है।'

इस पर संत ने आश्चर्य दिखाते हुए कहा= 'तुम्हारे जैसे लोग सेना में भर्ती किए जाते हैं? पहले अपनी शक्ल शीशे में जाकर देख लो।'

यह सुनते ही युवक गुस्से में आ गया और उसने म्यान से तलवार निकाल ली। तब संत ने फिर कहा, 'वाह! तुम्हारी तलवार भी कैसी है? इससे तुम किसी भी बहादुर का सामना नहीं कर सकते, क्योंकि वीरों की तलवार की चमक कुछ और ही होती है।'

फिर तो युवक गुस्से से आग-बबूला हो गया और संत को मारने के लिए झपटा। तब संत ने शांत स्वर से कहा- 'बस इसी को नरक कहते हैं। अब तुम्हारे लिए नरक का दरवाजा खुल गया।'

यह सुनते ही युवक को अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने तलवार म्यान में रख ली और संत के चरणों में सिर झुका दिया। जब वह संत से क्षमा माँगने लगा तो संत ने उसे रोकते हुए कहा- 'बस इसी का नाम स्वर्ग है। अब तुम्हारे लिए स्वर्ग का दरवाजा खुल गया।'

अब युवक समझ गया कि स्वर्ग और नरक क्या होता है। आप समझे कि नहीं। अरे! जब हम अपने मन और इन्द्रियों के अधीन हो कर अनुचित आचरण करते हैं, तो दु:ख प्राप्त करते हैं- और दु:ख ही नरक है। जब हम विवेक पूर्वक कार्य करते हैं, तो सुखी होते हैं, और इसी का नाम स्वर्ग है।

प्रार्थना

डॉ० रामकुमार वर्मा

करुणामय इस शुष्क हृदय में,
भर दो सरस सुधा धारा।
मेरे भाग्य गगन में चमके
मेरी उन्नति का तारा।।

मेरे तन के रोम रोम में,
शक्ति सिन्धु हो लहराता।
दिव्य रूप से सजी रहे नित
भाग्यवती भारत माता।।

श्रवणों में गुंजित हो जाए,
अविरत मधुर विश्व संगीत।
सदा दूसरों के हित में ही
यह जीवन हो समुद व्यतीत।।

मेरे मानस में खिल जाए,
नलिनी सम पद-भक्ति अनूप।।
ओष्ठों में गूंजे यश गायन,
दृग में रुचिर तुम्हारा रूप।

हम न तुम्हें भूलेंगे प्रभुवर,
करते नित्य तुम्हारा ध्यान।।
तुम भी हमें भूला मत देना,
यही मांगते हैं वरदान।।

thearyasamaj.org

गुगनराम एजुकेशन एवं सोशल वैल्फेयर सोसायटी द्वारा

साहित्यकार सम्मान समारोह आयोजित

भिवानी, गुगनराम एजुकेशन व सोशल वैल्फेयर सोसायटी द्वारा भव्य साहित्कार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रो० राधेमोहन राय पूर्व उपप्राचार्य राजकीय कला महाविद्यालय अलवर ने की तथा मुख्य अतिथि सत्यवीर कलोहिया, प्राचार्य रा क महाविद्यालय भिवानी, डॉ० राधाकृष्णन गणेशन, भारत कला भवन वाराणसी, प्रो० ललिता बी जोगड़ मुम्बई, विशिष्ट अतिथि श्रीमती निर्मला सर्राफ व स्वागताध्यक्ष थे वेदप्रकाश आर्य, प्रधान। समारोह में डॉ० राधेमोहन राय को गुगनराम सिहाग आजीवन साहित्य सृजन सम्मान, श्रीपाल आर्य को प्रथम पं० चन्द्रभानु आर्य स्मृति सम्मान, राधाकृष्णन् गणेशन को बिरमोदेवी निहालसिंह स्मृति सम्मान, ललिता बी जोगड़ को श्रीमती गिन्नादेवी साहित्य सम्मान से अलंकृत किया गया। डॉ० रामफल दलाल को सारस्वत सम्मान, नरेश सिहाग को साहित्य मार्तण्ड सम्मान त्रिवेणी संस्था कोलकाता द्वारा प्रदान किया गया। चित्रों में देश भर से पधारे साहित्यकारों को सम्मानित करते हुए सोसायटी के सचिव श्री नरेश सिहाग बोहल, स्व० पं० चन्द्रभानु आर्य के सुपुत्र श्री रमेश चन्द्र आर्य, श्री महेन्द्रसिह वर्मा, डॉ० रामफल दलाल व अन्य।

thearyasamaj.org

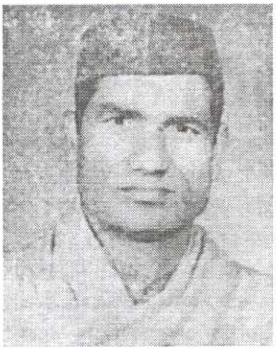

पं० शोभाराम प्रेमी का देहान्त

आर्यजगत् के प्रख्यात कवि और भजनोपदेशक पं० शोभाराम जी प्रेमी का गत ६ मार्च, २०१५ को मेरठ में निधन हो गया। वे एक प्रतिभाशाली कवि, प्रभावशाली वक्ता और समर्पित आर्योपदेशक थे। वे एक सिद्धहस्त रचनाकार थे। नई तर्जों के संबंध में उनका कथन था कि गिलास कभी इंकार नहीं करता उसमें शराब डाली जाए या दूध डाला जाए। प्रायः नई से नई तर्जों पर रचना करते थे। सैद्धांतिक ज्ञान से भरपूर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की उनकी रचनाएँ पूरे देश में गाई और पसन्द की जाती हैं। उनकी भजनों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उनके समग्र साहित्य का प्रकाशन परममित्र मानव निर्माण संस्थान द्वारा 'प्रेमी भजन मंजूषा' के नाम से हुआ। आपने अपने जीवन में अनेक आर्यसमाजों की स्थापना की और अनेक शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। वे एक सफल प्राकृतिक चिकित्सक भी थे। आपने आर्यसमाज के हिन्दी रक्षा आन्दोलन का प्रचार करते हुए जेलयात्रा भी की।

निजी जीवन में वे बहुत शानदार व्यक्तित्त्व के धनी थे। उनकी निजी बातचीत भी सौम्य और सुसंस्कृत होती थी। आपका स्वभाव हंसमुख और मिलनसार था। अन्य समकालीन उपदेशकों के सम्मान के पात्र थे और औरों का भी हृदय से सम्मान करते थे। आप मंच के मनोविज्ञान के ज्ञाता थे और हजारों श्रोताओं के समक्ष भी अत्यंत रोचक एवं प्रभावशाली शैली में प्रचार करते थे। शुद्ध पवित्र चरित्र के धनी और अर्थशुचिता के प्रति सदैव सजग थे। पूरे भारतवर्ष में आपने प्रचार किया और लोकप्रियता प्राप्त की। शांतिधर्मी की ओर से विनम्र श्रद्धांजली।

स्व० श्री बालकिशन हुड्डा की स्मृति में शांति यज्ञ का आयोजन

भलेराम आर्य, (सांघी वाले)

गत १ मार्च को श्री बालकिशन हुड्डा (पूर्व S.D.O. सिंचाई विभाग) का ८१ वर्ष की आयु में हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। यह जानकर उनके सभी परिचितों को बड़ा दुःख हुआ। ११ मार्च को उनके सुपुत्र श्री विनोदकुमार हुड्डा ने अपने निवास स्थान जी-१२, इन्द्रप्रस्थ कालोनी सोनीपत रोड़ रोहतक में बृहद् यज्ञ का आयोजन करवाया। ब्रह्मा श्री बलवीरसिंह शास्त्री थे और यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था बहन पूनम आर्या व प्रवेश आर्या ने संभाली। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी, उनके साथ सर्विस कर चुके सहकर्मी और उनके पैतृक गांव किलोई से बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। इनके पूर्वज पहले ही आर्य विचारधारा से जुड़ चुके थे। आर्यसमाज के उपदेशक इनके घर ही रुकते थे। बालपन से ही श्री हुड्डा वैदिक रंग में रंगे हुए थे। आर्यसमाज में गहन निष्ठा, सरलता, सादा जीवन, कर्त्तव्यपरायणता, ईमानदारी और समाजसेवा इनके व्यक्तित्त्व की विशेषता थी।

यज्ञ के पश्चात् आयोजित श्रद्धांजली सभा में स्वामी रामवेश जी ने गीता सार के माध्यम से उपस्थित लोगों को सांत्वना दी। स्वामी आर्यवेश जी ने ३५ वर्ष पुरानी यादों को ताजा करते हुए बताया कि वे अपने गांव ही नहीं, बाहर भी आर्यसमाज के कार्यों में जो सहायता और समय देते थे, वह चिरस्मरणीय रहेगा। उन्होंने उनके परिजनों को उनके बताए रास्ते पर चलने और उनकी स्मृति में यज्ञ परम्परा को जारी रखने की प्रेरणा दी।

स्व० श्री बालकिशन जी शांत, स्थिर प्रकृति के धनी थे। किसी सहकर्मी की कोई कमी भी होती तो वे अत्यंत शांत भाव से उसको बतलाते थे। सामाजिक और धार्मिक कार्यों में पूरा पूरा सहयोग करते थे। उनकी याद में प्रदूषणमुक्त वातावरण के लिए किसी सार्वजनिक स्थान पर त्रिवेणी लगाने का संकल्प किया गया। सभी उपस्थित आर्यजनों द्वारा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वे दिवंगत आत्मा को शांति व सद्गति प्रदान करें तथा परिवार तथा आर्यजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। इस अवसर पर उनके सुपुत्रों श्री विनोदकुमार हुड्डा व श्री रवीन्द्र कुमार ने अपने पिता की याद में अनेक संस्थाओं को ११०००/- का दान किया। श्री बलवीर सिंह शास्त्री ने सभी यज्ञ प्रेमियों का धन्यवाद किया।

thearyasamaj.org

ढिकौली में

युवाओं ने मचाई वेद प्रचार की धूम

-निज संवाददाता द्वारा-

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जनपद बागपत में ढ़िकौली आर्य विचारधारा से प्रभावित पुराना और बड़ा गांव है। आर्यसमाज के पुराने बड़े प्रचारक यहाँ प्रायः आते रहे हैं। पिछले कुछ समय से प्रचार में आई शिथिलता को दूर करके श्री विनोद कुमार आर्य व उनके साथियों की युवा टीम ने पाखण्ड व अंधविश्वास के विरुद्ध वैदिक प्रचार की धूम मचा दी है। इस टीम में श्री नगेन्द्र कुमार ढाका, दामोदर आर्य, विजयपाल सिंह, प्रवेन्द्र सिंह, मा० जगपाल सिंह, मा० सत्यपाल सिंह, लाखन सिंह आर्य सहित दर्जनों निष्ठावान युवाओं ने बुजुर्गों के आशीर्वाद से वेद प्रचार के कार्य में प्रशंसनीय प्रगति की है। गत दिसम्बर २०१४ में आर्यसमाज का दो दिवसीय वार्षिकोत्सव मनाया गया, जिसकी बहुत सुन्दर व्यवस्था की गई। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ उपदेशक महाशय श्रीपाल आर्य, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री, श्री सहदेव समर्पित, सम्पादक शांतिधर्मी, महाशय तेजवीर आर्य भजनोपदेशक, क्षेत्र के अनेक वरिष्ठ समाजसेवी पधारे। सांसद डॉ० सत्यपाल सिंह जी ने भी अपना प्रतिनिधि भेजकर आशीर्वाद प्रदान किया। इससे पूर्व भी इन युवकों ने गाँव की सभी पट्टियों में यज्ञ सहित नौ दिवसीय कार्यक्रम किया था, जिसका बड़ा व्यापक प्रभाव देखने को मिला। कार्यक्रमों में भारी संख्या में गांव के लोग, माताएँ बहनें उपस्थित होती रहीं। ग्राम के सुपठित युवाओं ने जो बाहर रहकर अपना व्यापार और नौकरी आदि कर रहे हैं, उन्होंने भी इस अवसर पर पधारकर अपना उत्साह दिखाया। आसपास के ग्रामों में से भी गणमान्य लोग पहुंचे। इस कार्यक्रम के सूत्रधार श्री विनोदकुमार आर्य सुपुत्र श्री वेद सिंह ढाका बहुत ही सुलझे हुए, शांत प्रकृति के, कर्मठ, ऋषिभक्त, श्रद्धालु आर्य युवा हैं। आपने अपने साथियों के साथ मिलकर क्षेत्र में नवीन जाग्रति ला दी है। आप लोग अपने क्षेत्र में शांतिधर्मी पत्रिका व अन्य राष्ट्रीय व वैदिक साहित्य का प्रचार करते रहते हैं। आर्यजगत् के वरिष्ठ उपदेशक महाशय श्रीपाल आर्य निरन्तर इन युवकों का उत्साह बढ़ाते रहते हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि वे इन युवकों को शक्ति व सफलता दें, ताकि इनका उत्साह बढ़ता रहे। वार्षिकोत्सव में अतिथियों को वैदिक साहित्य भेंट करते हुए आयोजक।

thearyasamaj.org

जींद, वेद प्रचार मण्डल जिला जींद द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस व क्रांतिकरियों के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में स्थानीय झांझ गेट पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें नगर व आसपास से भारी संख्या में आर्यजन उपस्थित हुए। मुख्य वक्ता के रूप में गुरुकुल कांगड़ी वि विद्यालय के कुलपति डॉ॰ सुरेन्द्रकुमार जी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। महाशय तेजवीर आर्य के भजनोपदेश हुए। संयोजन प्रो॰ ओमकुमार आर्य ने किया। चित्र में उपस्थिति।

जींद, आर्यसमाज जींद शहर के तत्त्वावधान में तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ, जिसमें आचार्य चन्द्रदेव जी तथा महाशय सुखपाल आर्य के प्रवचन/भजनोपदेश हुए। नगरवासियों ने उत्साह से सम्मिलित होकर धर्मलाभ उठाया।

ओ३म्

योग अपनाओ | रोग भगाओ!

योग व प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगवाने के लिए सम्पर्क करें

योगाचार्य सूर्यदेव आर्य

सम्पर्क : योग सदन, नजदीक महादेव पैट्रोल पम्प, उधमसिंह मार्ग, कृष्णा कालोनी, जींद-१२६१०२
मो॰ ९४१६६ १५५३६, ९४१६७ १५५३७

thearyasamaj.org

वैदिक धर्म एवं अन्य – पृष्ठ ९ का शेष

कर रहा है वे तो परमात्मा से दूर होने के कारण पाप करने में संकोच नहीं करेंगे। अतः वैदिक धर्म की शरण में आओ।

मेरा गांव पानीपत के पास है और पं० रामचन्द्र देहलवी दिल्ली में रहते थे। पानीपत में आर्यों और मौलवियों के मध्य शास्त्रार्थ बहुत हुआ करते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि एक मौलवी जी पानीपत आने के लिए रेलगाड़ी में बैठे हुए थे। संयोगव से देहलवी जी भी उसी गाड़ी से आ रहे थे। वे भी उसी डिब्बे में पहुंच गए। देहलवी जी ने मियाँ जी से पूछा कि कहाँ जा रहे हो? मौलवी जी ने कहा कि पानीपत जा रहा हूँ, वहाँ रामचन्द्र देहलवी से मेरा शास्त्रार्थ होगा जो कहता है कि कुरान इलहामी नहीं है, वेद ही इल्हामी है। इसी बात पर वहाँ मेरा देहलवी से शास्त्रार्थ होना है। देहलवी जी ने मियां जी से पूछा कि आज कौन सा दिन है? मौलवी जी ने कहा कि आज जुमेरात है। देहलवी जी ने कहा कि मैं रात नहीं दिन पूछ रहा हूँ। जब देहलवी जी ने पुनः दिन के विषय में पूछा तो मियाँ जी से फिर जुमेरात होने का ही उत्तर मिला। इस पर देहलवी जी ने कहा कि आप फिर रात बता रहे हैं, दिन नहीं। यह सुनकर मौलवी जी ने देहलवी जी से पूछा कि आपका क्या परिचय है। तब देहलवी जी ने कहा कि मुझे लोग रामचन्द्र देहलवी कहते हैं? इस पर मौलवी जी पानीपत न जाकर रास्ते में ही उतर गए। ये तो देहलवी जी थे। उस समय तो साधारण आर्य कार्यकर्त्ता भी इतने स्वाध्यायशील होते थे कि उनके तर्कों का उत्तर अन्य सम्प्रदायों वाले नहीं दे पाते थे।

वैदिक धर्म सर्वोपरि है। अतः यदि आप अपना भला चाहते हैं तो वेद के सिद्धांतों को अपनाओ। वैदिक धर्म के सिद्धांत वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था आदि कितनी सुन्दर व्यवस्थाएँ हैं! वैदिक धर्म सबसे पुराना है। ईसाई मत २००० वर्षों से है और मुसलमानी मत १४०० वर्षों से है जबकि वैदिक धर्म १,९७,२९,४९,१०४ वर्ष पुराना है। लगभग ५००० वर्ष पूर्व हुए महाभारत तक आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य रहा है। आर्यों का जो उच्चादर्श रहा है, वैसा आदर्श अन्य जातियों में देखने को नहीं मिलता। क्या राम और लक्ष्मण जी का भ्रातृ प्रेम अन्यत्र कहीं आपको देखने को मिलेगा? इसलिए आईए-यदि आपको अपने परिवार को, देश को, धर्म को बचाना है तो दयानन्द की शरण में आना पड़ेगा।

यह थोड़ी सी चर्चा वैदिक धर्म और अन्य सम्प्रदायों के बारे में की है। कभी फिर मौका मिलेगा तो सेवा करेंगे। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

देशी दवाखाना

आपका अपना आयुर्वेदिक औषधालय

हमारे यहाँ शरीर के सभी प्रकार के जोड़दर्द, अकड़न, गठिया बाय, वातरोग इत्यादि की देशी दवा दी जाती है।

सम्पर्क सूत्र : डॉ० जे०पी० सिंह
भगत सिंह कालोनी, कोर्ट के पीछे,
निकट एरोन पब्लिक स्कूल, जीन्द
मो० 9467657021

ऋषि दयानन्द के आदर्श – पृष्ठ १६ का शेष

थी महाभारतान्तर्गत उद्योगपर्व की विदुर द्वारा कथित उक्ति। अपने छोटे भाई नीतिमान् विदुर को जब अग्रज धृतराष्ट्र ने बुलाया और अपनी सम्मति देने को कहा, इसे महाभारतकार ने विस्तार से उद्योग पर्व में लिखा है। यहाँ विदुर कहते हैं-

बहवः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।
महाभारत-उद्योगपर्व अध्याय ३७-१५

हे राजन्! ऐसे पुरुष बहुत होते हैं, जो प्रियवादी होते है। अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिए अतिशयोक्ति करने से भी नहीं चूकते कभी-कभी मालिक को खुश करने के लिए उन्हें झूठ बोलने से भी परहेज नहीं होता। परन्तु ऐसे वक्ता और उनके श्रोता दुर्लभ ही हैं जो उस कटु सत्य को कहने में संकोच नहीं करते जो सुनने वाले के लिए हितकारी होता है, भले ही उसमें अप्रियता झलकती हो। खुद स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन में इसी आदर्श को अपने सामने रखा। उन्होंने सत्य, न्याय और धर्म के आगे रख कर ही बातें कहीं। कहीं भी सामने वाले को, चाहे वह कितना ही बड़ा शक्तिशाली सामन्त ही क्यों न हो, खुशामद भरी बात नहीं की और न मुंह देखी बात की।

उनका साक्षात्कार इस युग के राजा महाराजाओं, उच्च प्रशासनिक अधिकारियों तथा सामान्य जनों से होता था, परन्तु उन्होंने कभी लाग लपेट बातें नहीं की। नीतिकार ने यह तो कहा है कि सत्य बोलो, प्रिय बोलो। एक कदम आगे रख कर दयानन्द ने कहा अप्रिय सत्य कहने भी कभी संकोच मत करो। वे सबसे यह अपेक्षा रखते थे कि वे विदुर की इस उक्ति को अपने जीवन का आदर्श बनाये।

thearyasamaj.org

राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए शोधपत्र आमंत्रित

अथर्व शोध संस्थान भिवानी, गुगनराम सोसायटी व महर्षि दयानन्द शिक्षा संस्थान संयुक्त रूप से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहे हैं जिसके मुख्य विषय 'महर्षि दयानन्द सरस्वती व हिन्दी' व 'आर्यसमाज का नारी उत्थान में योगदान' हैं। इस संगोष्ठी के लिए माननीय प्रतिभागियों से उक्त विषयों पर शोधपत्र आमन्त्रित हैं। शोधपत्र 2000-2500 शब्दों में शुद्ध टंकित करवाकर ईमेल grsbohal@gmail.com पर ओपन फाईल में भेजें ताकि शोध पत्रों को पुस्तक रूप देने में सुविधा हो। साथ ही शोध-पत्र की एक हार्ड कापी के साथ अपना परिचय, फोटो एवं स्वयं का पता लिखा लिफाफा व पंजीकरण शुल्क रु 500/- का चैक/ड्राफ्ट/ आईपीओ **रामफलसिंह दलाल** के नाम बनवाकर भेज सकते हैं। शोध पत्र 31 अगस्त 2015 तक पंजीकृत डाक या कोरियर द्वारा इस पते पर भेजें-

डॉ० रामफलसिंह दलाल
निदेशक, अथर्व शोध संस्थान,
आर्यन टावर, रोहतक गेट भिवानी-127021 (हरियाणा)
चलभाष : 093155 17276

अन्तर्विषय:
(१) आर्यसमाज का हिन्दी आन्दोलन
(२) महर्षि दयानन्द का हिन्दी गद्य/पद्य पर प्रभाव
(३) आर्य साहित्यकारों का हिन्दी को योगदान
(४) आर्य समाज का नारी शिक्षा में योगदान

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

आर्य समाज राम नगर, रोहतक रोड़ जीन्द द्वारा

एक्यूप्रेशर एवं आयुर्वेद चिकित्सा शिविर

रविवार	शनिवार-रविवार	रविवार
26 अप्रैल, 2015	9-10 मई, 2015	24 मई, 2015

नियमित अंतराल पर तीन शिविर

स्थान : आर्य समाज राम नगर, रोहतक रोड़ जीन्द

समय : प्रातः 10.00 बजे से सांय 4.00 बजे तक

डॉ. राज सिंह आयुर्वेद रत्न
M.D. (Acc.), DYNS, M.Sc. (Yoga & Med.)

पंजीकरण शुल्क : मात्र 20रू.

डॉ. लक्ष्मण शर्मा
B.H.MS., M.D. (Acc.)

सम्पर्क सूत्र : 9255935328, 9416349775, 9416675810

सामवेद अथर्ववेद

प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा अपने स्वामित्व में, प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रेस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

स्वामी भीष्म जी महाराज के शिष्य उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

पं० चन्द्रभान आर्य

की चुनी हुई रचनाओं का संकलन

(हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित)

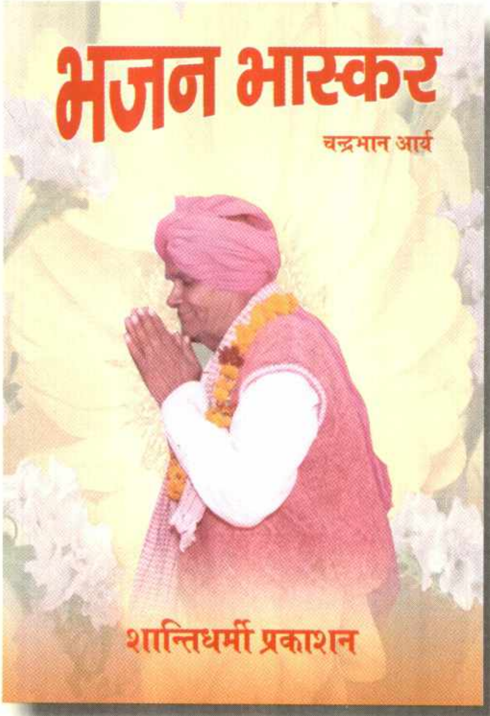

भजन भास्कर

❖भक्ति ❖प्रेरणा ❖शौर्य ❖नारी, चार सर्गों में विभक्त

पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹80 (अस्सी रुपये) केवल
पंजीकृत डाक से मंगवाने के लिए मूल्य अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी प्रकाशन

756/3 आदर्श नगर सुभाष चौक जींद-126102 (हरयाणा)

दूरभाष : 80596 64340, 94162 53826

theaœryasamaj.org
R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (अप्रैल, २०१५) P.R. No. : PKL 150-A/2014-16

ओ३म्

M- 98968 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. रविन्द्र कुमार आर्य

६, आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

ओ३म्

M.A. : 9992025406
P. : 9728293962

NDA No. : 236964
DL No. : 2064

अशोका मैडिकल हॉल

अशोक कुमार आर्य Pharmacist, आयुर्वेद रत्न
R.M.P.M.B.M.S.

हमारे यहाँ पर नजला, पथरी, ल्यूकोरिया, शारीरिक कमजोरी, दाद, खारीश का आयुर्वेदिक देशी जड़ी बूटियों द्वारा ईलाज

विशेष : हमारे यहाँ जीवन दायिनी च्यवनप्राश मिलता है।

अशोका मैडिकल हाल नजदीक वैद्य रामचन्द्र हस्पताल, पटियाला चौक, जीन्द